होशे की भविष्यवाणिय बुद्धि

अध्याय 2

बुद्धिमानों के लिए प्रकाशन

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....................1
दंड और आशा....................2
मूल अर्थ....................2
दंड के बाद की आशीषें....................2
यहूदा के द्वारा आशीषें....................4
आधुनिक प्रयोग....................7
मसीह की दुल्हन....................8
मसीह में अंत के दिनों में....................9
प्रकट होने वाला दंड....................12
मूल अर्थ....................12
इस्राएल का विद्रोह....................13
यहूदा का विद्रोह....................18
आधुनिक प्रयोग....................20
मसीह की दुल्हन....................20
मसीह में अंत के दिन....................21
प्रकट होने वाली आशा....................23
मूल अर्थ....................23
परमेश्वर के प्रत्युत्तर....................24
लोगों के प्रत्युत्तर....................27
आधुनिक प्रयोग....................30
मसीह की दुल्हन....................30
मसीह में अंत के दिन....................31
उपसंहार....................33

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

होशे की भविष्यवाणिय बुद्धि

अध्याय दो

बुद्धिमानों के लिए प्रकाशन

परिचय

जीवन के कठिन अनुभव अक्सर हमें बुद्धि की बहुत सी बातें सिखाते हैं। और जो अंतर्दृष्टियाँ हम परमेश्वर के बारे में, अपने बारे में और संसार के बारे में सीखते हैं, वे हमारे आस-पास के लोगों के लिए अनमोल हो सकती हैं जब वे अपने कष्टों का सामना करते हैं। भविष्यवक्ता होशे के लिए यह निश्चित रूप से सच था। उसने कई दशकों तक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में परमेश्वर से प्रकाशनों को प्राप्त किया। और अपने बाद के वर्षों में पवित्र आत्मा ने उसे प्रेरित किया कि वह प्राचीन इस्राएल और यहूदा को उनके घोर कष्टों के दौरान बुद्धि प्रदान करने के लिए इन प्रकाशनों को संकलित करे।

यह हमारी श्रृंखला *होशे की भविष्यवाणिय बुद्धि* का दूसरा अध्याय है, जिसका शीर्षक हमने "बुद्धिमानों के लिए प्रकाशन" दिया है। इस अध्याय में हम देखेंगे कि होशे ने परमेश्वर के प्राचीन लोगों को बुद्धि प्रदान करने के लिए आरंभ से लेकर अंत तक कैसे अपनी पुस्तक की रचना की।

अपने पिछले अध्याय में हमने सीखा था कि होशे की पुस्तक पद 1:1 में एक शीर्षक के साथ आरंभ होती है जो होशे की सेवकाई की पूरी समय-रेखा का परिचय देता है। और वह पद 14:9 में एक समाप्ति के साथ ख़त्म होती है जो होशे के पाठकों को भविष्यवाणियों से बुद्धि को प्रदान करने की बुलाहट देती है। इन पदों के बीच होशे की पुस्तक के मुख्य भाग में तीन मुख्य विभाजन पाए जाते हैं। पद 1:2–3:5 में पहला विभाजन परमेश्वर की ओर से दंड और आशा दोनों पर ध्यान केंद्रित करता है। पद 4:1–9:9 में दूसरा विभाजन परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध परमेश्वर के प्रकट होने वाले दंड पर और अधिक बारीकी से ध्यान देता है। और पद 9:10–14:8 में तीसरा विभाजन उस प्रकट होने वाली आशा की ओर लौटता है जिसे परमेश्वर ने होशे की भविष्यवाणियों के द्वारा प्रकट किया। हमने होशे की पुस्तक के व्यापक उद्देश्य को भी इस रीति से सारगर्भित किया था :

> होशे की पुस्तक ने यहूदा के अगुवों को उससे बुद्धि प्राप्त करने की बुलाहट दी जो परमेश्वर ने होशे की संपूर्ण सेवकाई के दौरान प्रकट किया था, जब वे सन्हेरीब के आक्रमण की चुनौतियों का सामना कर रहे थे।

जैसे कि यह सारांश दर्शाता है, यहूदा के अगुवों को बुद्धि की बहुत अधिक आवश्यकता थी। परमेश्वर ने राजा हिजकिय्याह के समय में सन्हेरिब के आक्रमण के दौरान या फिर संभवतया उसके बाद यहूदा के विरुद्ध विनाशकारी दंड की चेतावनी दी। और होशे की पुस्तक ने यहूदा के अगुवों को बुलाहट दी कि वे उससे बुद्धि को प्राप्त करें जो परमेश्वर ने होशे की संपूर्ण सेवकाई के दौरान प्रकट किया था ताकि वे इन मुश्किल भरे समयों में परमेश्वर के लोगों की अगुवाई कर सकें।

यह खोजने के लिए कि कैसे होशे ने इस उद्देश्य को पूरा किया, हम बुद्धिमानों के लिए दिए गए उन प्रकाशनों की ओर संकेत करेंगे जिन्हें होशे ने अपनी पुस्तक के प्रत्येक मुख्य विभाजन में शामिल किया था। हम पहले विभाजन में दंड और आशा की भविष्यवाणियों के साथ आरंभ करेंगे। फिर, हम दूसरे विभाजन में दंड के प्रकट होने की घोषणाओं पर ध्यान देंगे। और अंततः हम तीसरे विभाजन में आशा के प्रकट होने के प्रकाशनों को खोजेंगे। आइए पहले हम दंड और आशा की होशे की भविष्यवाणियों में प्रकट अंतर्दृष्टियों को देखें।

दंड और आशा

आपको याद होगा कि पद 1:2–3:5 में होशे की पुस्तक के पहले विभाजन में वे भविष्यवाणियाँ पाई जाती हैं जिन्हें होशे ने यारोबाम द्वितीय के शासनकाल में उत्तरी इस्राएल में प्राप्त किया था। जैसा कि हमने अपने पिछले अध्याय में सीखा था, ये 744 ईसा पूर्व में अश्शूर के शक्तिशाली बन जाने के विषय में भविष्यवाणियाँ थीं। इस अध्याय में हम देखेंगे कि इन आरंभिक प्रकाशनों के होशे के प्रस्तुतिकरण ने बड़ी सावधानी के साथ परमेश्वर के दंड की प्रत्येक चेतावनी को आशापूर्ण आश्वासनों के साथ संतुलित किया कि परमेश्वर अब भी भविष्य में उन्हें आशीष देगा।

होशे के द्वारा इस पुस्तक को लिखे जाने के समय तक परमेश्वर के कड़े दंड के अधीन इस्राएल के राज्य का पतन हो चुका था, और दंड की चेतावनी यहूदा के विरुद्ध भी आ चुकी थी। ये कठोर वास्तविकताएँ यहूदा के अगुवों के लिए निराशाजनक और दुविधा से भरी थीं। परमेश्वर क्या कर रहा था? भविष्य के बारे में उन्हें किन बातों पर विश्वास करना चाहिए था। अपनी पुस्तक के पहले तीन अध्यायों में होशे ने यहूदा के अगुवों को बुद्धि प्रदान करना शुरू किया जब वे इस प्रकार के प्रश्नों का सामना कर रहे थे।

जब हम परमेश्वर की ओर से दंड और आशा पर आधारित होशे के अध्यायों को देखते हैं, तो हम उनके मूल अर्थ के साथ आरंभ करेंगे — अर्थात् उन लोगों के लिए उनके महत्व के साथ जिन्होंने उसकी पुस्तक को सबसे पहले प्राप्त किया था। फिर हम इन अध्यायों के आधुनिक प्रयोग की खोज करेंगे। आइए हम अपनी पुस्तक के पहले पाठकों के लिए होशे के मूल अर्थ के साथ आरंभ करें।

मूल अर्थ

यदि होशे ने उन प्रकाशनों को सारगर्भित किया होता जो उसने पुस्तक के पहले विभाजन में दिए थे, तो उसने कुछ इस तरह कहा होता :

> दंड की अवधि के बाद इस्राएल यहूदा के साथ फिर से जुड़ने और दाऊद के घराने के प्रति समर्पित होने के द्वारा अंत के दिनों में परमेश्वर की आशीषों को ग्रहण करेगा।

एक ओर होशे की भविष्यवाणियों ने सिखाया कि परमेश्वर की आशीषें इस्राएल के उत्तरी गोत्रों को तब मिलेंगी जब उन्होंने दंड की एक अवधि को सह लिया हो। परंतु दूसरी ओर उन्होंने यह भी सिखाया कि अंत के दिनों में यहूदा के साथ इस्राएल के फिर से जुड़ जाने और दाऊद के घराने के प्रति उनके समर्पित होने के द्वारा परमेश्वर इन आशीषों को उंडेलेगा।

हम इस विभाजन के मूल अर्थ को दो चरणों में देखेंगे। पहला, होशे ने परमेश्वर की इस योजना को प्रकट किया कि इस्राएल दंड की अवधि के बाद परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करेगा। दूसरा, होशे ने स्पष्ट किया कि वे आशीषें यहूदा *के माध्यम से* आएँगी। आइए इन दोनों चरणों को खोजें, और होशे की इस शिक्षा के साथ आरंभ करें कि परमेश्वर की आशीषें इस्राएल को दंड की अवधि के बाद ही प्राप्त होंगी।

दंड के बाद की आशीषें

होशे ने पद 1:2–2:1 में अपने पहले के पारिवारिक अनुभवों के व्यक्तिगत विवरण के साथ इस विभाजन को आरंभ किया।

पहले के पारिवारिक अनुभव — यह खंड पद 1:2-9 में पारिवारिक विवरण के साथ आरंभ होता है। पद 2, 3 में परमेश्वर ने होशे को गोमेर से विवाह करने की आज्ञा दी, जो एक "वेश्या" थी। यह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विवरण दर्शाता है कि वह उन बहुत सी वेश्याओं में से एक थी जो इस्राएल के प्रजनन-संबंधी आराधना केंद्रों में कार्य करती थीं। उसके जीवन के चाल-चलन ने होशे के वैवाहिक जीवन पर काली छाया डाल दी थी। परंतु इससे बढ़कर उनके विवाह ने दर्शाया कि परमेश्वर ने स्वयं को वाचा के द्वारा एक अविश्वासयोग्य प्रजा — इस्राएल की प्रजा — के साथ जोड़ दिया था।

फिर पद 4-9 में परमेश्वर ने होशे को अपने बच्चों के विशेष नाम रखने की आज्ञा दी जिन्होंने परमेश्वर के सामने इस्राएल की दशा को प्रकट किया। होशे के पहले पुत्र का नाम यिज्रेल था; 2 राजाओं 10 स्पष्ट करता है कि यारोबाम द्वितीय के पूर्वज राजा येहू ने यिज्रेल में भयानक हिंसा के साथ अपने साम्राज्य को स्थापित किया। होशे के पहले पुत्र का नाम यिज्रेल रखने ने दर्शाया कि इस्राएल पर भयानक दंड आने वाला था। होशे की दूसरी संतान जो कि बेटी थी, का नाम लोरुहामा रखा गया, जिसका अनुवाद "प्रेम नहीं" या "दया नहीं" के रूप में किया जा सकता है। इस नाम ने दर्शाया कि परमेश्वर इस्राएल के राज्य के प्रति प्रेम को दर्शाना और उन पर दया करना बंद करने जा रहा था। अंततः परमेश्वर ने होशे को उसकी तीसरी संतान का नाम लोअम्मी, अर्थात् "मेरी प्रजा नहीं" रखने की आज्ञा दी। इस पुत्र के नाम ने प्रकट किया कि एक निश्चित समय तक परमेश्वर इस्राएल के साथ ऐसा व्यवहार करेगा जैसे कि वह उसके क्रोध के तले कोई अन्यजाति का राष्ट्र हो।

होशे के आरंभिक पारिवारिक अनुभवों ने उस भयानक दंड को प्रकट किया जो इस्राएल पर आने वाला था। परंतु होशे ने पद 1:10–2:1 में तुरंत दंड के इन वचनों को ईश्वरीय प्रेरित आशापूर्ण भविष्यवाणिय चिंतनों के साथ संतुलित किया। यहाँ उसने यह घोषणा की कि इस्राएल के विरुद्ध आने वाले विनाश के बावजूद भी परमेश्वर उत्पत्ति 13, 22 में अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा। होशे 1:10 को सुनिए जहाँ होशे ने यह घोषणा की :

> इस्राएलियों की गिनती समुद्र की बालू की सी हो जाएगी, जिनका मापना-गिनना अनहोना है; और जिस स्थान में उनसे यह कहा जाता था, "तुम मेरी प्रजा नहीं हो," उसी स्थान में वे जीवित परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे (होशे 1:10)।

> भविष्यवाणी की पुस्तकों में हम पाते हैं कि यहोवा कभी-कभी अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के अपने दृढ़ संकल्प पर बल देने के लिए प्रतीकों का प्रयोग करता है। उसने प्रतीकात्मक कार्यों का प्रयोग किया। इसलिए जब उसने होशे को एक वेश्या से विवाह करने को कहा, तो परमेश्वर हमारे सामने स्पष्ट रूप से अपने लोगों की अविश्वासयोग्यता को प्रकट करना चाहता था कि कैसे उसके लोगों ने अन्य देवताओं, अर्थात् अन्य राष्ट्रों के देवताओं का अनुसरण करने के द्वारा एक व्यभिचारिणी के समान कार्य किया था, उससे भी बढ़कर एक वेश्या के रूप में। परंतु भविष्यवक्ता होशे के द्वारा उसने दर्शाया कि अपनी प्रजा की वेश्यावृति, अर्थात् अपनी प्रजा की अविश्वासयोग्यता के बावजूद भी वह अपनी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा।
>
> — डॉ. डेविड कोरेआ, अनुवाद

अपने पहले के पारिवारिक अनुभवों के संतुलित विवरण के बाद होशे पद 2:2-23 में अपनी पुस्तक में परमेश्वर के पहले मुक़द्दमे की ओर मुड़ा।

परमेश्वर का मुक़द्दमा — जैसे कि हम भविष्यवाणिय मुक़द्दमों में आम तौर पर अपेक्षा करते हैं, पद 2:2-23 में परमेश्वर ने स्वर्ग के न्यायकक्ष में घोषणा की कि उत्तरी इस्राएल उसके शापों के कष्टों को सहेगा। गोमेर और उसकी वेश्यावृत्ति के समान इस्राएली परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य रहे थे, और परमेश्वर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अश्शूरी साम्राज्य के उत्थान के द्वारा उन पर शाप डालने वाला था। परंतु अधिकांश ईश्वरीय मुक़द्दमों के समान यह मुकद्दमा परमेश्वर की ओर से शापों के साथ समाप्त नहीं हुआ। इसके विपरीत पद 14-23 में परमेश्वर ने उन आशीषों के बारे में भी बात की जो इस्राएल के दंड के बाद आएँगी। पद 2:18 में परमेश्वर के आशापूर्ण वचनों को सुनिए :

> उस समय मैं उनके लिये वन पशुओं और आकाश के पक्षियों और भूमि पर के रेंगनेवाले जन्तुओं के साथ वाचा बाँधूँगा, और धनुष और तलवार तोड़कर युद्ध को उनके देश से दूर कर दूँगा; और ऐसा करूँगा कि वे लोग निडर सोया करेंगे (होशे 2:18)।

यहाँ हम देखते हैं कि परमेश्वर ने इस्राएल के साथ एक ऐसी वाचा बाँधने की प्रतिज्ञा करने के द्वारा दंड के बाद एक अच्छे भविष्य की निश्चितता को व्यक्त किया, जिसकी भविष्यवाणी बाद के भविष्यवक्ताओं ने भी की। यिर्मयाह 31:31 इस वाचा के बारे में "नई वाचा" के रूप में बात करता है। और यशायाह 54:10, और यहेजकेल 34:25 तथा 37:26 सब इसे "शांति की वाचा" के रूप में दर्शाते हैं।

यहाँ होशे की भविष्यवाणी ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि कैसे परमेश्वर की आशीषें प्रकृति को पुनर्स्थापित करेंगी — "वन पशुओं और आकाश के पक्षियों और भूमि पर के रेंगनेवाले जन्तुओं।" और परमेश्वर ने अश्शूर की ओर से हिंसा की समाप्ति की प्रतिज्ञा भी की। वह "धनुष और तलवार तोड़कर युद्ध को उनके देश से दूर" करेगा और इस्राएल के लोग "निडर सोया करेंगे।"

यह बताने के बाद कि कैसे दंड और आशा उसके पहले के पारिवारिक अनुभवों और परमेश्वर के पहले मुक़द्दमे में प्रकट किए गए थे, होशे अब पद 3:1-5 में अपने बाद के पारिवारिक अनुभवों के वर्णन की ओर मुड़ा।

बाद के पारिवारिक अनुभव — होशे 3 पद 1-3 में आत्मकथात्मक पारिवारिक विवरण के साथ आरंभ होता है। हम देखते हैं कि गोमेर वेश्यावृत्ति की ओर लौट चुकी थी। परंतु परमेश्वर ने पद 1 में होशे को यह आज्ञा दी, "अब [गोमेर के पास] जाकर एक ऐसी स्त्री से प्रीति कर, जो व्यभिचारिणी हो।" होशे ने आज्ञा मानी, पर पद 3 में उसने गोमेर से कहा कि उसे "बहुत दिन तक" तक बिना पुरुष के रहना होगा। फिर भी, होशे दंड के इन वचनों में सावधान था कि वह दंड के इन वचनों को ईश्वरीय रूप से प्रेरित आशापूर्ण भविष्यवाणिय चिंतनों के द्वितीय समूह के साथ संतुलित करे। पद 3:4-5 में हम यह पढ़ते हैं :

> क्योंकि इस्राएली बहुत दिन तक बिना राजा, बिना हाकिम, बिना यज्ञ, बिना लाठ, और बिना एपोद या गृहदेवताओं के बैठे रहेंगे। उसके बाद वे... यहोवा के पास, और उसकी उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते हुए आएँगे (होशे 3:4-5)।

जैसे कि यह अनुच्छेद दर्शाता है, किसी पुरुष के बिना गोमेर के समय ने दर्शाया कि इस्राएल को एक लंबे समय विनाश का सामना करना पड़ेगा, "बहुत दिन तक बिना राजा, बिना हाकिम, बिना यज्ञ, बिना लाठ, और बिना एपोद या गृहदेवताओं के।" परंतु एक बार फिर होशे ने आशापूर्ण दृष्टिकोण पर बल दिया कि इस दंड की समाप्ति पर इस्राएल परमेश्वर की "उत्तम वस्तुओं" या आशीषों को प्राप्त करेगा।

अब जबकि हमने देख लिया है कैसे पहले विभाजन के मूल अर्थ ने दंड की अवधि के बाद परमेश्वर की आशीषों पर बल दिया, इसलिए आइए उन प्रकाशनों को खोजें कि ये भविष्य की आशीषें यहूदा के द्वारा आएँगी।

यहूदा के द्वारा आशीषें

आपको याद होगा कि होशे की सेवकाई के पहले चरण के दौरान यहूदा का राजा उज्जिय्याह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य था। इसलिए जब परमेश्वर ने इस समय इस्राएल के उत्तरी राज्य पर दंड की

घोषणा की, तो उसने दक्षिणी राज्य के प्रति बिल्कुल अलग तरह से प्रत्युत्तर दिया। पद 1:7 में उसने कहा, मैं "यहूदा के घराने पर मैं दया करूँगा।" परंतु जैसे कि हम देखने जा रहे हैं, इस पहले विभाजन में होशे की भविष्यवाणियों में कहने के लिए इससे बढ़कर बहुत कुछ था। पहले विभाजन में से होशे के प्रकाशनों के दूसरे भाग को सुनें। होशे ने यहूदा के अगुवों को सिखाया कि :

> ... इस्राएल यहूदा के साथ फिर से जुड़ने और दाऊद के घराने के प्रति समर्पित होने के द्वारा अंत के दिनों में परमेश्वर की आशीषों को ग्रहण करेगा।

यह समझने के लिए कि क्यों होशे ने यहूदा के द्वारा आने वाली परमेश्वर की आशीषों पर अपने प्रकाशनों को केंद्रित किया, हमें पुराने नियम के उन तीन विषयों की पुनर्समीक्षा करनी होगी जिन्होंने होशे की भविष्यवाणियों को आकार दिया। पहली बात यह है कि कुलपिताओं के समय से ही पुराने नियम ने इस्राएल के 12 गोत्रों की एकता के महत्व पर बल दिया। उत्पत्ति की पुस्तक इस आदर्श को दर्शाती है, विशेषकर यूसुफ और उसके भाइयों के पुनर्मिलन में। और निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण, यहोशू, न्यायियों और शमूएल की पुस्तकें भी संपूर्ण इस्राएल की एकता को प्रोत्साहित करती हैं। निस्संदेह होशे ने अपनी सेवकाई तब आरंभ की जब इस्राएल और यहूदा के गोत्र विभाजित हो गए थे और एक दूसरे के विरुद्ध थे। परंतु इन पहले के बाइबल-आधारित आदर्शों के अनुरूप होशे ने बल दिया कि इस्राएल के लिए परमेश्वर की भविष्य की आशीषों में 12 गोत्रों के एकता में बंधने की आवश्यकता होगी।

दूसरी बात यह है कि होशे ने दाऊद के घराने के प्रति समर्पण के पुराने नियम के विषयों से भी प्रेरणा ली। बाइबल की कई आरंभिक पुस्तकें, विशेषकर न्यायियों, शमूएल और राजाओं, तथा कई आरंभिक भजन पुष्टि करते हैं कि दाऊद का घराना, अर्थात् यहूदा का राजकीय वंश, परमेश्वर के सब लोगों के ऊपर एक स्थाई राजवंश बनने वाला था। पहले विषय के समान यह विषय भी यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी में स्थापित है। उत्पत्ति 49:10 में कुलपिता याकूब ने अपने पुत्रों पर भविष्यवाणी की और बताया कि यहूदा से "राजदंड" — राजकीय अधिकार का प्रतीक — "न छूटेगा।" अतः जब उत्तरी गोत्रों ने दाऊद के सिंहासन के अधिकार को त्याग दिया, तो होशे ने बल दिया कि इस्राएल की भावी आशीषें दाऊद के घराने के शासन के प्रति उनके नए समर्पण की मांग करेंगी।

तीसरी बात यह है कि यहूदा के माध्यम से आने वाली आशीषों के बारे में होशे के आशापूर्ण वचनों को समझने हेतु संपूर्ण इतिहास के लिए परमेश्वर के परम लक्ष्य को ध्यान में रखना भी महत्वपूर्ण है। जैसे कि पुराने नियम की कई ऐतिहासिक पुस्तकें और भजन दर्शाते हैं, दाऊद के घराने के तहत परमेश्वर के लोगों के संगठित होने का *कारण* अंततः पृथ्वी के छोर तक परमेश्वर के राज्य को फैलाना था। पहले के समान हम इस विषय को यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी में पाते हैं। जब याकूब ने उत्पत्ति 49:10 में अपने पुत्र यहूदा पर भविष्यवाणी की, तो उसने न केवल यह कहा, "राजदंड यहूदा से न छूटेगा," बल्कि यह भी कहा, "राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएँगे।"

अंत में, इस्राएल के बारह गोत्र यहूदा के राजा के अधीन संगठित होकर पूरे संसार में परमेश्वर के राज्य को फैलाएँगे। और यहूदा के विषय में होशे की सबसे आरंभिक भविष्यवाणियों ने भविष्य के इस महिमामय दर्शन को प्रोत्साहित किया। इस पृष्ठभूमि के प्रकाश में होशे 1:11 को सुनें और देखें कैसे होशे ने इन विषयों को छुआ :

> तब यहूदी और इस्राएली दोनों इकट्ठे हो अपना एक प्रधान ठहराकर देश से चले आएँगे; क्योंकि यिज्रेल का दिन प्रसिद्ध होगा (होशे 1:11)।

यहाँ होशे ने भविष्यवाणी की कि "यिज्रेल का दिन" — वह आतंक जो अश्शूर इस्राएल के विरुद्ध लेकर आएगा — "प्रसिद्ध" होगा। परंतु परमेश्वर की ओर से आए इस दंड के बाद "यहूदी और इस्राएली

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दोनों इकट्ठे हो" एक संगठित राष्ट्र की रचना करेंगे। और वे अपने लिए "एक प्रधान," या राजा ठहराएँगे। और पद 3:5 में होशे ने इस प्रकार पुराने नियम के इन दृष्टिकोणों का विस्तार से वर्णन किया :

> उसके बाद वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद को फिर ढूँढ़ने लगेंगे, और अन्त के दिनों में यहोवा के पास, और उसकी उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते हुए आएँगे (होशे 3:5)।

जैसे कि हम यहाँ देखते हैं, "उसके बाद" — इस्राएल के दंड के समय के बाद — "[इस्राएली]" न केवल "अपने परमेश्वर यहोवा" को बल्कि "अपने राजा दाऊद को फिर ढूँढ़ने लगेंगे।" और ध्यान दें कि होशे ने कहा कि ये घटनाएँ "अंत के दिनों" में घटित होंगी। यह वाक्यांश इब्रानी अभिव्यक्ति *बाहरित हायामिम* (*בְּאַחֲרִית הַיָּמִים*) से लिया गया है। अन्य अनुच्छेदों में इस और इस जैसे अन्य वाक्यांशों का अनुवाद केवल "भविष्य में" के रूप में किया गया है। परंतु यहाँ इसका अनुवाद सही तरीके से "अंत के दिनों में" के रूप में किया गया है — जो कि परमेश्वर के लोगों के निर्वासन के बाद इतिहास के अंत का समय है जब परमेश्वर के उद्देश्य पूरे होंगे।

जैसा कि हमने अन्य श्रृंखलाओं में ध्यान दिया है, पुराने नियम के कई भविष्यवक्ताओं ने व्यवस्थाविवरण 4:25-31 से "अंत के दिनों" की अभिव्यक्ति को लिया था। इन पदों में मूसा ने परमेश्वर के लोगों को चेतावनी दी कि यदि वे जानबूझकर परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन करते हैं तो परमेश्वर उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ सौंप देगा और प्रतिज्ञा के देश से उन्हें निर्वासन में भेज देगा। परंतु पद 30 में मूसा ने परमेश्वर के लोगों को फिर से आश्वस्त किया कि "अंत के दिनों में" वे पश्चाताप करेंगे और उनका निर्वासन समाप्त हो जाएगा। मूसा की भविष्यवाणियों के अनुसार होशे ने भविष्यवाणी की कि उत्तरी इस्राएल परमेश्वर के दंड के अधीन भयानक कष्टों का सामना करेगा। परंतु जैसा कि हमने अभी देखा है, उसने इस बात कि फिर से पुष्टि की कि वे पश्चाताप करेंगे, यहूदा के साथ फिर से मिल जाएँगे, और दाऊद के घराने के प्रति समर्पित होंगे। और यह सब अंत के दिनों की आशीष को लेकर आएगा जब इतिहास अपनी भव्य पूर्णता में पहुँचेगा, और परमेश्वर का राज्य पूरे संसार में फ़ैल जाएगा।

> ऐसे समय रहे हैं जब आप "अंत के दिनों" के वाक्यांश के प्रयोग को देखते हैं, जैसे कि पंचग्रंथ। एक उदाहरण व्यवस्थाविवरण 4 के अंत में है... उस संदर्भ में, जो मूसा इस्राएल के बारे में चेतावनी दे रहा है, जब वे प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने ही पर थे; जब वे प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश कर लें तो वह कहता है कि यदि वे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं और उन बातों का अनुसरण नहीं करते जिनकी अपेक्षा उनसे सीनै पर्वत की वाचा में की गई थी तो अंततः उन्हें प्रतिज्ञा के देश से निकालकर और निर्वासन में भेज दिया जाएगा। अतः मूसा यह कह रहा या चेतावनी दे रहा है कि जब उन्हें देश से निकाल दिया जाता है, अनाज्ञाकारिता के कारण निर्वासन में भेज दिया जाता है, फिर भी उन लोगों के लिए यह आशा बनी रहती है कि यदि वे "अंत के दिनों" में परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं और उसे पुकारते हैं तो वह उन्हें वापस लेकर आएगा। और निस्संदेह यह हमारे परमेश्वर की अद्‌भुत झलक है जो अपने लोगों को छोड़ देने के लिए तैयार नहीं है, और यह इस बात का महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक आधार है कि परमेश्वर कौन है — अर्थात् वह ऐसा परमेश्वर है जो पुनर्स्थापित करता है, ऐसा परमेश्वर जो पाप करने के बाद भी छुटकारा देता है। यह यीशु मसीह के व्यक्तित्व और अंत में जो वह पूर्ण रूप से करेगा, उसमें परमेश्वर के अंत के समय के कार्यों की समझ का एक आधार प्रदान करता है।

एंड्रू आबेरनेती, पीएच.डी.

अब यह देखना आसान है कि क्यों होशे ने यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के दौरान *पहले* उत्तरी इस्राएल में दंड और आशा की इन आरंभिक भविष्यवाणियों की घोषणा की। परमेश्वर ने उसे इसलिए बुलाया कि वह इस्राएल को उस ईश्वरीय दंड की चेतावनी दे जो आने वाला था, और उन्हें परमेश्वर की दया को खोजने को प्रेरित करे। और यद्यपि उत्तरी इस्राएल ने होशे की भविष्यवाणियों को नजरअंदाज किया और परमेश्वर के दंड को सहा, फिर भी इन चेतावनियों को देने के पीछे होशे का *उद्देश्य* स्पष्ट था।

परंतु होशे ने दंड और आशा की इन संतुलित भविष्यवाणियों को दशकों बाद क्यों शामिल किया जब उसने *यहूदा* में अपनी इस पुस्तक की रचना की? वह क्या हासिल करने की आशा कर रहा था? पहली बात तो यह कि इन आरंभिक भविष्यवाणियों ने हिजकिय्याह के दिनों में यहूदा के अगुवों को होशे की पूरी पुस्तक में प्रकट बुद्धि की बातों को समझने के लिए एक मजबूत नींव प्रदान की। जिस प्रकार इस्राएल ने परमेश्वर के दंड का सामना किया था, वैसे ही अब यहूदा परमेश्वर के दंड का सामना कर रहा था, और उन्हें अपनी अगुवाई के लिए होशे की पुस्तक में प्रकट प्रकाशनों की आवश्यकता थी। परंतु होशे ने अपनी पुस्तक का यह पहला विभाजन इसलिए भी लिखा कि वह यहूदा को परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर की अंतिम योजना की याद दिलाए। चाहे जो कुछ भी हुआ हो, या फिर होने वाला हो, अंत के दिनों में परमेश्वर की आशीषों के प्रकट होने का केवल एक तरीका था। दाऊद का एक पुत्र राष्ट्र को इकट्ठा करेगा और इस्राएल तथा यहूदा को परमेश्वर की भव्य आशीषों की ओर लेकर जाएगा।

हमें ध्यान देना चाहिए कि 2 इतिहास 30 के अनुसार अपने शासनकाल के आरंभ में हिजकिय्याह ने इस्राएल और यहूदा को दाऊद के पुत्र के रूप में अपने शासन में संगठित करने का प्रयास किया। परंतु बाद में वह परमेश्वर से फिर गया और उसका प्रयास विफल रहा। इस्राएल अव्यवस्थित रहा, और यहूदा दंड के अधीन आ गया और उन आशीषों की तब भी प्रतीक्षा करता रहा जो "अंत के दिनों में" आने वाली थीं।

होशे के आरंभिक, और दंड तथा आशा के संतुलित प्रस्तुतिकरण के मूल अर्थ पर ध्यान देने के बाद, आइए हम अपनी पुस्तक के इस विभाजन के आधुनिक प्रयोग की ओर मुड़ें।

आधुनिक प्रयोग

मसीहियों ने होशे की पुस्तक को विविध रूपों में अपने जीवनों में लागू किया है। परंतु दुखद रूप में, हम में से बहुत से लोग अपने प्रयोगों को लापरवाही से काम में लाते हैं। हम तब तक ऐसे ही पढ़ते जाते हैं जब तक हमें तुलनात्मक रूप से ऐसा कोई छोटा धर्मवैज्ञानिक या नैतिक सिद्धांत नहीं मिल जाता जो उन अन्य बातों के साथ मेल खाए जिन पर हम मसीह के अनुयायी होने के रूप में विश्वास करते हैं। अब पवित्र आत्मा हमें सामान्यतः उन बातों से बहुत अधिक भटकने नहीं देता जब हम इन छोटे-छोटे भागों पर ध्यान देते हैं। परंतु हम उन मुख्य विषयों पर ध्यान देने के द्वारा एक अलग दृष्टिकोण लेना चाहते हैं जो दंड और आशा की होशे की पहले की भविष्यवाणियों में प्रकट होते हैं।

जब हम होशे के पहले विभाजन के आधुनिक प्रयोग की ओर बढ़ते हैं तो हम पुस्तक के इस भाग और नए नियम के बीच के दो महत्वपूर्ण संबंधों की जांच करेंगे। पहला, नया नियम मसीह की दुल्हन के रूप में कलीसिया के बारे में क्या सिखाता है? और दूसरा, यह मसीह में अंत के दिनों के बारे में क्या सिखाता है? आइए पहले ध्यान दें कि कैसे मसीह की दुल्हन का नए नियम का दृष्टिकोण हमारे जीवनों को होशे के समय से जोड़ता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मसीह की दुल्हन

होशे के पहले तीन अध्यायों में गोमेर से होशे के विवाह की कहानी परमेश्वर के अपने पुराने नियम के लोगों, अर्थात् इस्राएल और यहूदा, के साथ संबंध को प्रतीक के रूप में दर्शाती है। होशे और गोमेर अपनी वैवाहिक वाचा से बंधे थे; परमेश्वर और उसके लोग परमेश्वर की वाचा के द्वारा एक दूसरे से बंधे थे। गोमेर ने होशे के साथ अपनी वाचा को तोड़ दिया; इस्राएल और यहूदा ने भी परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को तोड़ दिया। होशे ने गोमेर के साथ अपने प्रेम और अपनी वैवाहिक वाचा को फिर से स्थापित किया; परमेश्वर ने अंत के दिनों में अपने लोगों के साथ अपने प्रेम और अपनी वाचा को फिर से स्थापित करने की प्रतिज्ञा की। इन समानांतर बातों ने जानबूझकर इस्राएल और यहूदा के साथ परमेश्वर के संबंध की तुलना मानवीय विवाह से की।

अन्य भविष्यवक्ताओं ने भी इस्राएल और यहूदा के साथ परमेश्वर के संबंध को विवाह जैसे परंतु कम व्यक्तिगत रूपों में दर्शाया है। हम इसे यशायाह 62:5 और यिर्मयाह 2:2, 32; 31:32 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं।

नया नियम कलीसिया को मसीह की दुल्हन के रूप में दर्शाते हुए पुराने नियम के इस विषय पर और अधिक निर्माण करता है, लगभग वैसे ही जैसे होशे ने परमेश्वर को इस्राएल और यहूदा के पति के रूप में प्रस्तुत किया। यह रूपक 2 कुरिन्थियों 11:2, इफिसियों 5:25-33, प्रकाशितवाक्य 19:7; 21:2, 9 जैसे अनुच्छेदों में पाया जाता है।

नए नियम का यह दृष्टिकोण इस तथ्य को दर्शाता है कि मसीही कलीसिया पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों से निकली है। बाइबल के पूरे इतिहास में परमेश्वर की केवल एक दुल्हन रही है। अतः मसीही कलीसिया के साथ मसीह का संबंध कोई नया संबंध नहीं है। बल्कि, यह तो पुराने नियम के लोगों के साथ परमेश्वर के संबंध का विस्तार है। निस्संदेह, नए नियम की कलीसिया में बहुत से लोग अन्यजातियों से हैं। परंतु नए नियम के लेखकों ने स्पष्ट किया कि पुराने नियम में भी अन्यजाति के लोग अब्राहम के परिवार में रोपे या अपनाए जाकर परमेश्वर के लोगों के भाग बन सकते थे। इसी कारण, परमेश्वर की पुराने नियम की दुल्हन, इस्राएल और यहूदा, के विषय में होशे के प्रकाशन मसीह की दुल्हन के रूप में हम पर लागू होते हैं, फिर चाहे हम प्राकृतिक रूप से किसी भी राष्ट्र के हों।

> जब हम नए नियम की कलीसिया के बारे में बात करते हैं, तो यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि यह कोई नई बात नहीं है; यह पुराने नियम के इस्राएल के लिए परमेश्वर के छुटकारे के उद्देश्यों पर आधारित है। परमेश्वर की एक प्रजा है, उसकी एक योजना है, जो उसकी अनंतता से रही है, और फिर उसने छुटकारे के इतिहास में इस पर कार्य किया और हमारे सामने इसे प्रकट किया... पुराने नियम के विश्वासियों ने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं, उन वाचाई प्रतिज्ञाओं पर विश्वास किया जिन्होंने यीशु मसीह के आने की आशा रखी। कलीसिया अब उसके आने के प्रकाश में और अधिक समझ तथा और अधिक स्पष्टता के साथ उस पर विश्वास करती है, परंतु प्रतिज्ञा वही है, और छुड़ानेवाला भी वही है; उसमें हम सब एक हैं। हम संपूर्ण इतिहास में परमेश्वर की एक प्रजा हैं। फिर भी, नए नियम में स्पष्ट रूप से कुछ भिन्नताएँ हैं। वहाँ एक पूर्णता हुई है। वहाँ एक अधिक गहरी समझ है। वहाँ एक पूरा समुदाय है जिसमें ऐसे लोग शामिल हैं जिन्होंने नया जन्म पाया है और जो प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास रखते हैं। परंतु हमें नए नियम की कलीसिया के साथ परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों की निरंतरता, समानता के महत्व को कम नहीं करना चाहिए। हमें पुराने नियम के विश्वासियों और कलीसिया के विश्वासियों के आधार पर इस्राएल को परमेश्वर के सच्चे लोगों से अलग नहीं करना चाहिए। और यह याद रखना चाहिए कि एक ही प्रजा है, एक ही योजना है, और वह योजना

> अब भी कार्यरत है। और नए आकाश, नई पृथ्वी में जब मसीह फिर से आएगा और सब बातों को पूरा करेगा, तब यहूदी और अन्यजाति के लोग, जो पुराने नियम के विश्वासी हैं, अर्थात् यहूदियों और अन्यजातियों से मिलकर बनी कलीसिया के भागी हैं, और सारी जातियाँ प्रभु यीशु के सामने घुटने टेकेंगी, और अनंतता तक उसकी स्तुति करेंगी।
>
> — डॉ. स्टीफन जे. वेलम

होशे के पहले विभाजन के हमारे आधुनिक प्रयोग में हमने होशे और मसीह की दुल्हन के रूप में स्वयं के बीच एक संबंध को देखा है। अब, आइए देखें कि कैसे परमेश्वर की दुल्हन के भविष्य के लिए होशे की आशाएँ अंत के दिनों में मसीह में पूरी होती हैं।

मसीह में अंत के दिनों में

अपनी पुस्तक के पहले विभाजन में होशे ने इस आशा की पुष्टि की कि दंड की अवधि के बाद परमेश्वर इस्राएल और यहूदा पर असीम आशीषें उंडेलेगा। और उसने यह स्पष्ट किया कि यह "अंत के दिनों में" होगा। परंतु क्योंकि परमेश्वर के लोगों ने निरंतर विद्रोह करना जारी रखा, इसलिए परमेश्वर का दंड उन पर 700 वर्षों से अधिक तक बना रहा। आज भी, परमेश्वर की ओर से लंबे समय तक ताड़ना मिलने के बावजूद, यीशु और उसके पहली सदी के चेलों और भविष्यवक्ताओं ने कभी अंत के समय के विषय में होशे की आशापूर्ण भविष्यवाणियों को नहीं त्यागा। बल्कि नए नियम के लेखकों ने बार-बार नए नियम के संपूर्ण युग को, अर्थात् मसीही कलीसिया के युग को, यूनानी शब्द *एस्खाटोस* (*ἔσχατος*) का प्रयोग करते हुए "अंत के दिनों" के रूप में पहचाना। यही वह शब्द है जिससे हमें हमारी धर्मवैज्ञानिक अभिव्यक्ति "युगांत-विज्ञान" मिली है। सरल रूप में कहें तो, नए नियम के लेखकों ने सिखाया कि यीशु दाऊद वह महान पुत्र है जो युगांत-संबंधी या "अंत" के दिनों के विषय की होशे की भविष्यवाणियों को पूरा करता है।

परंतु, जैसा कि हमने अन्य श्रृंखलाओं में देखा है, नया नियम यह भी सिखाता है कि अपनी दुल्हन के लिए परमेश्वर की अंत के दिनों की आशीषें तीन चरणों में प्रकट हो रही हैं। पहला चरण मसीह के राज्य का उद्घाटन था जब यीशु ने अपने पहले आगमन में और अपने चेलों तथा भविष्यवक्ताओं की सेवकाइयों में कलीसिया की नींव को स्थापित किया। दूसरा चरण पूरे कलीसियाई इतिहास में मसीह के राज्य की निरंतरता है। और तीसरा चरण राज्य की अंतिम पूर्णता होगा जब मसीह महिमा में वापस आएगा और सब बातों को नया बनाएगा।

मसीह के अनुयायियों के रूप में हमें मसीह के राज्य के इन तीनों चरणों के प्रकाश में होशे की दंड और आशा की आरंभिक भविष्यवाणियों को लागू करना चाहिए। पहला, मसीह के पहले आगमन में अंत के दिनों का उद्घाटन होशे की भविष्यवाणियों की पूर्णता के लिए मंच को तैयार करता है। मसीह, अर्थात् उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण में विश्वास के द्वारा स्त्री, पुरुष और बच्चे कलीसिया के भाग बनते हैं। इस रीति से, मसीह के साथ उनका संबंध जुड़ गया है या मसीह के साथ वे प्रतिज्ञा में बंध गए हैं। जैसे कि प्रेरित पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 11:2 में कुरिन्थियों से कहा, "मैं ने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है कि तुम्हें पवित्र कुँवारी के समान मसीह को सौंप दूँ।" अतः मसीह के राज्य के उद्घाटन में जिस आशा को होशे ने अंत के दिनों में परमेश्वर की दुल्हन के लिए प्रस्तुत किया, वह मसीह की दुल्हन अर्थात् कलीसिया में पूरा होना आरंभ हुई।

नए नियम का सुसमाचार बल देता है कि यीशु ने स्वयं अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान परमेश्वर की दुल्हन के लिए होशे की अंत के दिनों की आशाओं को पूरा करना शुरू किया। यीशु ने यहूदा

से परमेश्वर के राज्य के लिए चुने हुए अनुयायियों को बुलाया, परंतु उसने उत्तरी इस्राएल से *भी* अनुयायियों को इकट्ठा किया, विशेषकर गलील की झील के आस-पास से। दोनों क्षेत्रों के विश्वासयोग्य अनुयायियों से मिलाकर अपनी कलीसिया की रचना करने के द्वारा यीशु ने दाऊद के पुत्र के रूप में अपने शासन के अधीन इस्राएल और यहूदा को फिर से एक करना आरंभ किया।

और यही नहीं, प्रेरितों 1:8 में यीशु ने अपने प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के लिए जिस मिशन की स्थापना की, वह होशे की अंत के दिनों की अपेक्षाओं से भी मेल खाता है। दाऊद के घराने के अधीन मसीह द्वारा इस्राएल और यहूदा को एक किया जाना परमेश्वर की योजना का ही भाग था। अंत के दिनों के लिए परमेश्वर के भव्य लक्ष्य को पूरा करने के लिए यीशु के प्रेरितों को उसके गवाह बनना था, न केवल इस्राएल और यहूदा के क्षेत्रों में बल्कि "पृथ्वी की छोर तक।" इसी कारण 1 पतरस 2:10 में प्रेरित पतरस ने होशे के पहले दो अध्यायों की ओर संकेत किया जब उसने आरंभिक कलीसिया का वर्णन किया — अर्थात् एक ऐसी कलीसिया का जिसमें यहूदा के लोग, उत्तरी इस्राएल के लोग और अन्यजाति के लोग शामिल थे। पतरस ने यह लिखा :

> तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है (1 पतरस 2:10)।

रोमियों 9:25, 26 में प्रेरित पौलुस ने भी लगभग यही किया जब उसने यह स्पष्ट करने के लिए होशे के पहले दो अध्यायों का उल्लेख किया कि कैसे परमेश्वर ने यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को मसीही कलीसिया में शामिल किया। ये अनुच्छेद दर्शाते हैं कि पूरे संसार में कलीसिया की मसीह के साथ मँगनी अंत के दिनों के लिए होशे की आशाओं की पूर्णता का आरंभ है।

दूसरा, होशे के प्रकाशन संपूर्ण कलीसियाई इतिहास में अंत के दिनों की निरंतरता के दौरान मसीह की देह में पूरे हो रहे हैं। जब मसीह स्वर्ग से शासन कर रहा है, तो वह पृथ्वी पर अपनी दुल्हन को भी पवित्र करना जारी रखता है। इसी लिए पौलुस ने पतियों को मसीह के समान बनने का निर्देश दिया कि वे अपनी पत्नियों के लिए स्वयं का त्याग करने के लिए भी तैयार रहें। जैसे कि वह इफिसियों 5:26, 27 में कहता है, मसीह अपनी दुल्हन के लिए मरा, "कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे... [जो] पवित्र और निर्दोष हो।"

पूरे कलीसियाई इतिहास में परमेश्वर ने यहूदा और इस्राएल से एक किए लोगों के रूप में अपनी दुल्हन को बनाना और उन्हें पूरे संसार के अन्यजातियों के साथ जोड़ना जारी रखा है। और उसने हमें बयाने के रूप में अपने पवित्र आत्मा का दान दिया है जिसमें हमें उन अद्‌भुत आशीषों का आश्वासन मिला है जिन्हें हम अंत के दिनों की पूर्णता के समय प्राप्त करेंगे। पवित्र आत्मा के साथ जुड़ने के द्वारा हमें सुसमाचार, या शुभ-संदेश, की यह घोषणा करने के द्वारा परमेश्वर के राज्य को फैलाने का बड़ा सौभाग्य दिया गया है कि मसीह में अंत के दिन आ गए हैं। और जब हम यह करते हैं तो हम प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं कि होशे की भविष्यवाणियाँ कैसे पूरी हो रही हैं। पूरे संसार के यहूदी और अन्यजाति के लोग प्रभु को खोजने, परमेश्वर के लोगों के साथ जुड़ने, दाऊद के महान पुत्र यीशु के प्रति समर्पित होने, और पृथ्वी की छोर तक परमेश्वर के राज्य को फैलाने के द्वारा अंत के दिनों की आशीषों में प्रवेश करते हैं।

तीसरा, होशे के पहले भाग के प्रकाशन हमें आज मसीह के राज्य की पूर्णता की हमारी परम आशा के प्रकाश में जीने की बुलाहट देते हैं। जब मसीह आएगा तो वह उन सब पर अनंत दंड लेकर आएगा जो उस पर विश्वास नहीं करते। परंतु नया नियम हमें इस बात का एक दमदार और महिमामय दर्शन देता है कि मसीह की दुल्हन के लिए यह कैसा होगा जब भविष्य के बारे में होशे की आशाएँ पूर्ण रूप से पूरी होंगी।

> सृष्टि की रचना हुई, पतन हुआ, मसीह में छुटकारा भी है, और फिर एक पूर्णता भी होगी। इतिहास अपनी समाप्ति की ओर बढ़ रहा है। परमेश्वर सब बातों को पूरा

> करने जा रहा है। जो जो बातें गलत हैं उन्हें सही किया जाएगा। और मसीह ने प्रतिज्ञा की है कि वह वापस आएगा। यूहन्ना 14 में वह कहता है कि वह हमारे लिए जगह तैयार करने जा रहा है और यदि वह जाकर जगह तैयार करेगा तो वापस आकर हमें अपने साथ ले जाएगा। मसीह जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने के लिए भी वापस आएगा... मसीह का पुनरागमन कई कारणों से महत्वपूर्ण है, उनमें से एक यह है कि मसीह का पुनरागमन मसीह के पुनरुत्थान की पूर्णता है। वह जी उठा है; वह वास्तव में जी उठा है। वह जी उठा है ताकि वह वापस आ सके। और यही हम प्रभु भोज में कहते हैं, है न? "जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।"
>
> — डॉ. वोडी बौखम, जूनियर

प्रकाशितवाक्य 19:7, 8 में प्रेरित यूहन्ना ने मसीह के पुनरागमन के समय आने वाली पूर्णता का वर्णन एक बड़े विवाह-भोज के रूप में किया। यूहन्ना के वचनों को सुनिए :

> आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है। उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया (प्रकाशितवाक्य 19:7, 8)।

अंत के दिनों में दंड के बाद की आशीषों के बारे में होशे की आशा तब पूर्ण रूप से पूरी होगी जब परमेश्वर की दुल्हन नई सृष्टि में प्रवेश करेगी। और यहूदा से, इस्राएल के उत्तरी गोत्रों से, और पृथ्वी की प्रत्येक जाति से विश्वासी नई सृष्टि को भर देंगे। अतः दंड और आशा की होशे की सबसे पहले की भविष्यवाणियों से हम विवश हो जाएँ कि हम मसीह की दुल्हन के रूप में अपने महिमामय भविष्य की अपनी आशा को बनाए रखें। और हमें बड़े हर्ष के साथ स्वयं को पूरे संसार में अंत के दिनों की बड़ी आशीषों को फैलाने के प्रति समर्पित करना चाहिए जब तक यीशु का महिमामय पुनरागमन नहीं हो जाता।

> उस समय के बारे में सोचने का एक तरीका जिसमें मसीही अब स्वयं को पाते हैं, अर्थात् मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच की अज्ञात अवधि के अंतराल को "अंत के दिनों" के रूप में समझा जाना चाहिए... हमारे लिए यह विचित्र हो सकता है। परमेश्वर ने एक ही बार में उद्धार के कार्य को पूरा क्यों नहीं कर दिया, और मसीह के पहले आगमन में पृथ्वी को हर प्रकार से पूरी तरह से नया क्यों नहीं बना दिया? उत्तर यह है कि हम नहीं जानते; हम परमेश्वर नहीं हैं। वह निर्णय करेगा। परंतु जब हम महिमा और प्रताप में मसीह के पुनरागमन की प्रतीक्षा करते हैं, नई-नई बातें होना आरंभ हो गई हैं। एक नए तथा और अधिक सामर्थी रूप में सब मसीहियों पर पवित्र आत्मा उंडेला गया है। परमेश्वर यीशु में नए कार्य कर रहा है, वह पहले से कहीं अधिक अपने शुभ संदेश के मिशन को और अधिक शक्ति के साथ सब जातियों तक पहुँचा रहा है। अतः फिर से, परमेश्वर नई बातों को कर रहा है। यद्यपि हम उस पूर्णता की प्रतीक्षा करते हैं जो परमेश्वर यीशु में पूरे संसार और मनुष्यजाति तथा उस पर भरोसा रखनेवालों के लिए करेगा, फिर भी अब एक विरोधाभास है, अंत आरंभ हो चुका है, परंतु अब तक पूर्ण रूप से पूरा नहीं हुआ

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

है। और यह समझ उन सब बातों का आधार है जो हम मसीहियों के रूप में करते हैं।

— डॉ. जेफ्री ए. गिब्स

अब जबकि हमने परमेश्वर की ओर से दंड और आशा के विषय में बुद्धिमानों के लिए होशे के प्रकाशनों को जाँच लिया है, इसलिए अपनी पुस्तक के दूसरे विभाजन और परमेश्वर के प्रकट होने वाले दंड पर होशे के केंद्र पर ध्यान देना चाहिए।

प्रकट होने वाला दंड

अपनी पुस्तक के दूसरे विभाजन में होशे ने इस्राएल और यहूदा के विरुद्ध उन प्रकाशनों को एकत्र किया जो उसने अपनी सेवकाई के दशकों में परमेश्वर से प्राप्त किए थे। उसने इन प्रकाशनों की ओर इसलिए ध्यान खींचा ताकि वह यहूदा के उन लोगों को जिन्होंने उसकी पुस्तक को सबसे पहले प्राप्त किया था वे अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करे जिनकी आवश्यकता उन्हें अपनी परिस्थितियों में बुद्धिमान बनने के लिए थी। परमेश्वर उत्तरी इस्राएल पर पहले ही बार-बार कड़े दंड उंडेल चुका था, और वह इसी बात की चेतावनी यहूदा को भी दे रहा था। अतः यहूदा के अगुवों को इन प्रकाशनों से बुद्धि की किन बातों को प्राप्त करना था? होशे ने जो भविष्यवाणी की, उसके प्रकाश में उन्हें परमेश्वर के लोगों की अगुवाई कैसे करनी थी? और उसकी पुस्तक के दूसरे विभाजन के प्रकाशन आज हमारे सामने बुद्धि की किन बातों को प्रकट करते हैं?

जैसा कि हमने अपने पिछले अध्याय में देखा था, प्रकट होने वाले दंड पर आधारित होशे के अध्याय दो खंडों में विभाजित होते हैं। पहला, यह खंड पद 4:1–5:7 में परमेश्वर के दो और मुक़द्दमों के साथ आरंभ होता है। दूसरा, पद 5:8–9:9 में होशे ने उन भविष्यवाणियों को प्रकट किया जिन्होंने चेतावनी के लिए परमेश्वर की दो बुलाहटों को दर्शाया।

आपको यह भी याद होगा कि होशे ने परमेश्वर के प्रकट होने वाले दंड के बारे में भविष्यवाणियों को प्राप्त किया जब परमेश्वर ने दो प्रमुख अश्शूरी आक्रमणों के द्वारा अपने शापों को उंडेला। परमेश्वर के मुक़द्दमों पर केंद्रित होशे की भविष्यवाणियाँ तब आईं जब उसने 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के बारे में प्रकाशनों को प्राप्त किया था। और चेतावनी के लिए परमेश्वर की बुलाहटों की उसकी भविष्यवाणियाँ उन प्रकाशनों से निकलीं जिन्हें उसने सबसे पहले 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के बारे में प्राप्त किया था।

जैसा कि हमने पहले किया था, हम इन अध्यायों के मूल अर्थ पर ध्यान देने के द्वारा परमेश्वर के प्रकट होने वाले दंड पर होशे द्वारा दिए गए बल की जाँच करेंगे। फिर हम इस विभाजन के आधुनिक प्रयोग की ओर मुड़ेंगे। आइए अपनी पुस्तक के दूसरे विभाजन के लिए होशे के मूल अर्थ के साथ आरंभ करें।

मूल अर्थ

हमेशा की तरह, उन बातों को सारगर्भित करने के ऐसे कई तरीके जिनमें होशे ने आशा की थी कि उसके प्रकाशन इन अध्यायों में उसके मूल पाठकों को शिक्षा देंगे। परंतु हमारे उद्देश्यों के लिए हम इसे इस प्रकार रखेंगे :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> इस्राएल ने अपने नियमित विद्रोह के कारण परमेश्वर के कड़े दंड को सहा, और अब यहूदा भी वैसे ही दंड का सामना करता है क्योंकि उन्होंने भी विद्रोह किया है।

होशे की पुस्तक के रचे जाने के समय तक अश्शूरियों ने इस्राएल के उत्तरी राज्य को नष्ट कर दिया था और यहूदा के विनाश का खतरा भी उत्पन्न कर दिया था। यह स्पष्ट करने हेतु कि ऐसा क्यों हुआ, होशे अपने मूल पाठकों को दो दृष्टिकोणों के बारे में आश्वस्त करने के लिए अपनी सेवकाई के अलग-अलग चरणों की भविष्यवाणियों से लेकर गया। पहला, इस्राएल ने अपने नियमित विद्रोह के कारण परमेश्वर के कड़े दंड को सहा। और दूसरा, यहूदा ने अब परमेश्वर से वैसे ही दंड का सामना किया क्योंकि उन्होंने भी उसके विरुद्ध विद्रोह किया।

इस विभाजन के मूल अर्थ पर ध्यान देने के लिए हम पहले परमेश्वर के सामने इस्राएल के विद्रोह को देखेंगे। और फिर हम परमेश्वर के समक्ष यहूदा के विद्रोह के विषय को देखेंगे। आइए हम इस्राएल के विद्रोह के विषय में होशे के प्रकाशनों के साथ आरंभ करें।

इस्राएल का विद्रोह

इन पूरे अध्यायों में होशे की भविष्यवाणियों ने इस्राएल के विद्रोह पर इतना अधिक और इतने भिन्न तरीकों में बल दिया कि यह बहुत अधिक तीव्र दिखाई देता है। अतः यदि हम दो विषयों के संदर्भ में सोचें तो यह सहायक हो सकता है : परमेश्वर के आरोप और उसके दंड।

आरोप — एक ओर, होशे के प्रकाशनों ने इस्राएल के विरुद्ध चार प्रकार के आरोपों की ओर ध्यान आकर्षित किया। पहला, उसने दर्शाया कि इस्राएल ने परमेश्वर की वाचा और व्यवस्था की आधारभूत अपेक्षाओं का उल्लंघन किया था। परमेश्वर के मुक़द्दमों के बारे में बात करनेवाले खंड में परमेश्वर का पहले का मुक़द्दमा स्पष्ट दोषों के साथ आरंभ होता है। पद 4:1 में होशे ने कहा कि इस्राएल में "न तो कुछ सच्चाई है, न कुछ करुणा और न कुछ परमेश्वर का ज्ञान ही है।" पद 2 में होशे ने दस आज्ञाओं की ओर संकेत किया जब उसने कहा कि इस्राएल "शाप देने, झूठ बोलने, वध करने, चुराने, और व्यभिचार करने" में लगा रहता था। और इसी पद में परमेश्वर ने यह कहते हुए इस्राएल में हिंसा के विशेष घृणित पापों पर बल दिया कि वहाँ "खून ही खून होता रहता है।" होशे 4:6 यह स्पष्ट करने के द्वारा इस्राएल में व्याप्त दशाओं को सारगर्भित करता है कि इस्राएल ने "परमेश्वर की व्यवस्था को तज दिया है।" परमेश्वर के बाद के मुक़द्दमे में होशे ने फिर से व्यापक हिंसा के बारे में बात की। पद 5:2 में उसने घोषणा की, "उन बिगड़े हुओं ने घोर हत्या की है।"

तब चेतावनी के लिए परमेश्वर की बुलाहटों को दर्शानेवाली परमेश्वर की भविष्यवाणियों में चेतावनी के लिए परमेश्वर की पहली बुलाहट परमेश्वर की वाचा और व्यवस्था के इस केंद्र को दोहराती है। पद 6:7 में परमेश्वर ने कहा कि "उन लोगों ने आदम के समान वाचा को तोड़ दिया।" पद 8 और 9 यह कहते हुए फिर से हिंसा का उल्लेख करते हैं कि "गिलाद नामक गढ़ी... खून से भरी हुई है। डाकुओं के दल किसी की घात में बैठते हैं... याजकों का दल वध करता है।" होशे 7:1 व्यापक हिंसा का एक और आरोप लगाता है जब यह कहता है, "चोर भीतर घुसता, और डाकुओं का दल बाहर छीन लेता है।" चेतावनी के लिए परमेश्वर की दूसरी बुलाहट पद 8:1 में यह कहते हुए परमेश्वर के आरोप को दर्शाती है, "[इस्राएल ने] मेरी वाचा तोड़ी, और मेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया है।" और पद 12 में परमेश्वर ने व्यंग्यात्मक रूप में निष्कर्ष निकाला कि चाहे वह "अपनी व्यवस्था की लाखों बातें" भी लिखे, फिर भी इस्राएल उसकी उपेक्षा करेगा। वास्तव में, पद 9:7 बताता है कि इस्राएल ने परमेश्वर के वाचाई संदेशवाहकों, भविष्यवक्ताओं को निंदा के साथ देखा, और कहता है, "भविष्यद्वक्ता तो मूर्ख, और जिस पुरुष पर आत्मा — पवित्र आत्मा — उतरता है, वह बावला ठहरेगा।" होशे ने संदेह के लिए कोई गुंजाईश नहीं छोड़ी। इस्राएल ने परमेश्वर की वाचा और उसकी व्यवस्था का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन किया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इन अध्यायों में जिस दूसरे आरोप पर बल दिया गया है, वह है इस्राएल में व्याप्त मूर्तिपूजा के विरुद्ध आरोप। मूर्तिपूजा परमेश्वर के प्रति उस विश्वासयोग्यता का मूलभूत उल्लंघन था जिसकी माँग परमेश्वर ने अपने लोगों से की थी क्योंकि इसने अन्य राष्ट्रों के झूठे देवताओं के प्रति इस्राएल के विश्वासघाती समर्पण को प्रस्तुत किया था। 1 राजाओं 12:28 के अनुसार यारोबाम प्रथम ने सोने के बछड़े की आराधना को स्थापित किया जब उसने इस्राएल के राज्य की स्थापना की थी। और होशे जानता था कि परमेश्वर के विरुद्ध यह विद्रोह केवल बढ़ता ही गया था क्योंकि इस्राएलियों ने अपनी आराधना को कनानी धर्मों की मूर्तिपूजा के साथ मिला दिया था। मूर्तिपूजा तब भी हर बार बढ़ी जब इस्राएल ने किसी दूसरे राष्ट्र के साथ गठजोड़ किया क्योंकि प्राचीन जगत में अंतर्राष्ट्रीय गठजोड़ों में दूसरे राष्ट्रों के देवताओं को स्वीकार करने की माँग रखी जाती है।

> जब आधुनिक पाठक होशे की पुस्तक में इस बात पर ध्यान देते हैं कि वह उन गठजोड़ों की निंदा करता है जो इस्राएल ने दूसरे राष्ट्रों के साथ किए थे, तो हम अपना सिर खुजाते और हैरान होते हैं कि वहाँ क्या हो रहा है, क्योंकि जब हम अंतर्राष्ट्रीय गठजोड़ों को बनाने के बारे में सोचते हैं तो हम सोचते हैं कि वह तो एक अच्छी बात है। मेरे कहने का अर्थ है कि शांति और सुरक्षा और शक्ति और इन सब बातों को स्थापित करने के लिए यही एक देश दूसरे देश के साथ करता है। इसलिए हम इसे अच्छा ही समझते हैं। पर आपको यह समझना है कि पुराने नियम के दिनों में जब एक राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्र के साथ गठजोड़ करता था तो उसमें उनके देवताओं के साथ भी संबंध रखना शामिल होता था ताकि दोनों राष्ट्र एक दूसरे के देवताओं को भी स्वीकार करें। और इसलिए जब इस्राएल — या यहूदा — ने दूसरे राज्यों के साथ गठजोड़ किए तो वे वास्तव में उन राज्यों के देवताओं को स्वीकार कर रहे थे। और यह इस्राएल के परमेश्वर के विरुद्ध एक बड़ा विद्रोह था क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों से केवल अपने प्रति विश्वासयोग्यता की मांग की थी, और उसकी अपेक्षा थी कि वे केवल उस पर निर्भर रहें। परंतु जैसे ही उन्होंने अन्य राज्यों के साथ गठजोड़ किए, उसका अर्थ था कि उन्हें अन्य राज्यों के देवताओं को थोड़ा बहुत तो स्वीकार करना पड़ा। और इसके साथ-साथ वे वास्तव में उन देवताओं पर निर्भर भी रहने लगे और उनसे प्रार्थना भी करने लगे।
>
> — डॉ. रिर्चड, एल. प्रैट, जूनियर

हम परमेश्वर के मुक़द्दमों पर केंद्रित होशे की भविष्यवाणियों में व्यापक मूर्तिपूजा के प्रति परमेश्वर के आरोपों को देखते हैं। पद 4:13 में परमेश्वर के पहले के मुकद्दमे में परमेश्वर ने इस्राएल पर पहाड़ों की चोटियों, टीलों पर, तथा बांज, चिनार और छोटे बांज वृक्षों की छाया में मूर्तिपूजा करने का आरोप लगाया। और पद 17 में वह कहता है कि "एप्रैम — या इस्राएल — मूरतों का संगी हो गया है।" हम पद 5:1 में परमेश्वर के बाद के मुक़द्दमे में इस आरोप को भी पाते हैं जहाँ परमेश्वर ने इस्राएल के "याजकों" और अन्य अगुवों पर आरोप लगाया कि "तुम मिसपा में फन्दा... बन गए हो।" कई व्याख्याकारों ने होशे के समय की मिसपा में मिली कनानी मूर्तियों की पुरातात्विक खोजों पर ध्यान दिया है।

हम चेतावनी के लिए परमेश्वर की पहली बुलाहट में मूर्तिपूजा के ऐसे ही आरोपों को देखते हैं। पद 5:13 में हम यह पाते हैं कि इस्राएल अश्शूरियों और उनके देवताओं के साथ गठजोड़ करने के लिए "अश्शूर के पास गया।" होशे 7:11 कहता है कि इस्राएल ने मिस्रियों की दोहाई [देने], और अश्शूर को चले [जाने]" के द्वारा अन्य देवताओं को खोजा। पद 8:4 में चेतावनी के लिए परमेश्वर की दूसरी बुलाहट

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हमें बताती है कि "उन्होंने अपना सोना-चाँदी लेकर मूरतें बना लीं।" पद 5, 6 में परमेश्वर ने सोने के उस बछड़े की ओर संकेत किया जिसे यारोबाम प्रथम ने दान में स्थापित किया था, जब उसने कहा "हे शोमरोन, तेरा बछड़ा... शोमरोन का बछड़ा।" पद 9 में परमेश्वर ने फिर से कहा कि इस्राएली "अश्शूर को चले गए" थे। और पद 11 बताता है कि इस्राएल ने "पाप करने को बहुत सी [मूर्तिपूजक] वेदियाँ बनाई हैं।" इन सारे अध्यायों में होशे ने बार-बार इस्राएल की मूलभूत अविश्वासयोग्यता की ओर संकेत किया। उन्होंने दस आज्ञाओं की पहली और दूसरी आज्ञाओं को खुलेआम तोड़ा — अर्थात् दूसरे राष्ट्रों की मूर्तिपूजक रीतियों का अनुसरण करने के विरुद्ध दी गई आज्ञाओं को।

तीसरा आरोप जो इन अध्यायों में बार-बार पाया जाता है, वह है इस्राएल की वेश्यावृत्ति तथा व्यभिचार के विरुद्ध। होशे ने अपनी पत्नी की वेश्यावृत्ति से जिस पीड़ा का अनुभव किया, उसने इन आरोपों को व्यक्तिगत रूप से उसके लिए विशेषकर मर्मस्पर्शी बना दिया होगा। परंतु ये अध्याय प्रजनन रीतियों के व्यभिचार में इस्राएल की भागीदारी के कारण परमेश्वर की पीड़ा पर केंद्रित हैं।

परमेश्वर का पहले का मुक़द्दमा पद 4:2 में इस आरोप के साथ शुरू होता है कि इस्राएल व्यभिचार कर रहा था। इस आरोप ने उन भौतिक लैंगिक कार्यों को दर्शाया जो प्रजनन संबंधी धर्म में होते थे। पद 10, 11 के अनुसार परमेश्वर ने कहा कि इस्राएली "वेश्यागमन और दाखमधु और ताजे दाखमधु" का आनंद लेते हैं। वे इन रीतियों में इतने लिप्त थे कि पद 12, 13 में होशे ने कहा कि "छिनाला करानेवाली आत्मा ने उन्हें बहकाया है, और वे अपने परमेश्वर की अधीनता छोड़कर छिनाला करते हैं... बेटियाँ छिनाल और... बहुएँ व्यभिचारिणी हो गई हैं।" पद 15 में परमेश्वर ने कहा, "हे इस्राएल, तू छिनाला करता है।" और हम पद 18 में पढ़ते हैं कि वे "वेश्यागमन में लग जाते हैं।" फिर पद 5:3 में परमेश्वर के बाद के मुक़द्दमे में परमेश्वर ने फिर कहा, "तू ने छिनाला किया" है। और पद 4 में हम देखते हैं कि "छिनाला करनेवाली आत्मा उनमें रहती है।"

इस्राएल के व्यभिचार के उल्लेख चेतावनी के लिए परमेश्वर की पहली बुलाहट में भी मिलते हैं। होशे 6:10 "एप्रैम के छिनाले" के बारे में बात करता है। प्रजनन संबंधी धर्म इतना व्याप्त था कि पद 7:4 में परमेश्वर ने कहा कि "वे सब के सब व्यभिचारी हैं।" चेतावनी के लिए परमेश्वर की दूसरी बुलाहट में होशे ने इस आरोप को इतना सामान्य बना दिया कि पद 8:9 में उसने इस्राएल के परदेशी मजदूरों का वर्णन "यार" के रूप में किया। पद 9:1 में परमेश्वर ने कहा, "तू अपने परमेश्वर को छोड़कर वेश्या बनी। तू ने अन्न के हर एक खलिहान पर छिनाले की कमाई आनन्द से ली है।" इस्राएल में प्रजनन संबंधी धर्म के घृणित प्रचलन के कारण परमेश्वर बहुत चोटिल हुआ और तुच्छ जाना गया।

परमेश्वर ने इन अध्यायों में चौथे आरोप को भी रेखांकित किया : इस्राएल द्वारा यहोवा की पाखंडी आराधना। जैसे कि प्राचीन जगत में सामान्य था, इस्राएल के अगुवों ने अपनी राष्ट्रीय धार्मिक परंपराओं को पूरी तरह से नहीं ठुकराया था। उन्होंने आराधना में यहोवा के नाम को पुकारा और उसके सामने स्वयं को दीन करने की भी घोषणा की। परंतु उन्होंने यह मन से नहीं परंतु केवल बाहरी रूप में किया।

इसी लिए परमेश्वर के पहले के मुक़द्दमे ने पद 4:4 में यह कहते हुए प्रत्यक्ष रूप से इस्राएल के आराधना के अगुवों को संबोधित किया, "तेरे लोग तो याजकों से वाद-विवाद करनेवालों के समान हैं।" यही कारण है कि परमेश्वर ने पद 4:15 में बल दिया कि इस्राएल "यहोवा के जीवन की सौगन्ध कहकर शपथ न खाए।" इसी प्रकार पद 5:1 में परमेश्वर के बाद के मुक़द्दमे ने पाखंड के उसके आरोपों का और अधिक विस्तार किया और यह कहते हुए इस्राएल के सब अगुवों को शामिल कर लिया, "हे याजको... हे इस्राएल के सारे घराने" — यह शायद कुलीन लोगों का उल्लेख है — "हे राजा के घराने" — यह शायद राजकीय परिवार का उल्लेख है। पद 5:6 में उसने माना कि "वे अपनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल लेकर यहोवा को ढूँढ़ने चलेंगे।" परंतु उसने बल दिया कि वे परमेश्वर को नहीं पाएँगे क्योंकि "वह उन से दूर हो गया है।"

चेतावनी के लिए परमेश्वर की पहली बुलाहट में होशे ने पद 6:1 में यह कहते हुए इस्राएल से मन फिराने का आग्रह किया, "चलो, हम यहोवा की ओर फिरें।" परंतु पद 4 में परमेश्वर ने प्रकट किया कि उनका "स्नेह तो भोर के मेघ के समान, और सबेरे उड़ जानेवाली ओस के समान है।" और पद 6 में परमेश्वर ने बल दिया, "मैं बलिदान से नहीं, स्थिर प्रेम ही से प्रसन्न होता हूँ, और होमबलियों से अधिक यह चाहता हूँ कि लोग परमेश्वर का ज्ञान रखें।" पद 6:9 "याजकों" की कपटता को संबोधित करता है। और पद 7:7 के अनुसार, जब इस्राएल के एक के बाद एक राजा का पतन हो रहा था, तो परमेश्वर ने कहा, "उन में से कोई मेरी दोहाई नहीं देता है।" पद 14 में परमेश्वर ने घोषणा की, "वे मन से मेरी दोहाई नहीं देते।" पद 16 के अनुसार "वे फिरते तो हैं, परन्तु परमप्रधान की ओर नहीं।"

और हम चेतावनी की दूसरी बुलाहट में ऐसे ही आरोपों को पाते हैं। पद 8:2 में परमेश्वर ने कहा, वे मुझ से पुकारकर कहेंगे, "हे हमारे परमेश्वर, हम इस्राएली लोग तुझे जानते हैं।" परंतु वास्तव में, जैसे कि पद 3 हमें बताता है," इस्राएल ने भलाई को मन से उतार दिया है।" और पद 13 के अनुसार, "वे मेरे लिये बलिदान तो करते हैं... वे आप ही उसे खाते हैं; परन्तु यहोवा उनसे प्रसन्न नहीं होता।" यद्यपि हम आश्वस्त हो सकते हैं कि इस्राएल में होशे के समान सच्चे विश्वासी थे, परंतु मोटे तौर पर होशे की भविष्यवाणियों ने प्रकट किया कि इस्राएल के अधिकाँश लोगों की भक्ति, विशेषकर उनके अगुवों की, झूठी भक्ति से बढ़कर कुछ नहीं थी।

जैसे कि हम परमेश्वर के आरोपों के इस विवरण से देख सकते हैं, होशे ने बल दिया कि इस्राएल के पाप छोटे-मोटे पापों से कहीं बढ़कर थे। इसके विपरीत, उत्तरी इस्राएल परमेश्वर के विरुद्ध खुल्लमखुल्ले विद्रोह में पड़ गया था। उन्होंने परमेश्वर की वाचा और व्यवस्था को ठुकरा दिया था, वे व्यापक मूर्तिपूजा में पड़ गए थे, उन्होंने स्वयं को प्रजनन संबंधी धर्म के छिनाले और व्यभिचार में सौंप दिया था, और पाखंडी आराधना चढ़ाई थी। होशे की भविष्यवाणियों ने स्पष्ट किया कि इस्राएल के पाप परमेश्वर के कड़े दंड के योग्य थे। अतः जबकि इन आरोपों ने परमेश्वर के सामने इस्राएल के विद्रोह को *दर्शाया*, वहीं हमें भी यह मानना चाहिए कि इस विद्रोह के *प्रत्युत्तर* में परमेश्वर की ओर से दंड आ रहे थे।

दंड — अब इससे पहले कि हम इस्राएल के विद्रोह से संबंधित दंडों को देखें, दो बातों को मन में रखना महत्वपूर्ण है। पहली, पुराने नियम के अन्य भविष्यवक्ताओं के समान होशे ने उस पर ध्यान केंद्रित किया जिसे हम "अस्थाई दंड" कह सकते हैं। उत्तरी राज्य पर हुए अश्शूरी आक्रमणों से संबंधित आर्थिक कठिनाई, अकाल, मृत्यु, निर्वासन, इत्यादि जैसे दंड। उसने परमेश्वर के अनत दंडों के बारे में नहीं बताया — अर्थात् ऐसे दंडों के बारे में जो तब आएँगे जब इतिहास अंत के दिनों में अपनी पूर्णता में पहुँचेगा।

दूसरी, जैसे कि पुराना और नया नियम दोनों सिखाते हैं, जब परमेश्वर अपने अस्थाई दंड उंडेलता है तो उसके मन में अविश्वासियों और सच्चे विश्वासियों के लिए अलग-अलग उद्देश्य होते हैं। उन अविश्वासियों को जो कभी मन नहीं फिराते और कभी उद्धार देनेवाले विश्वास को कार्य में नहीं लाते, परमेश्वर के अस्थाई दंड अंत के दिनों की पूर्णता पर अनंत दंड की ओर लेकर जाएँगे। परंतु सच्चे विश्वासियों के लिए परमेश्वर के अस्थाई दंड उसका प्रेमपूर्ण अनुशासन है जिनकी रचना अंत के दिनों की पूर्णता पर अनंत आशीषों को निश्चित करने के लिए की गई है।

732 ईसा पूर्व के अश्शूरी आक्रमण से संबंधित उन दंडों पर ध्यान दें जो परमेश्वर के मुक़द्दमों में प्रकट होते हैं। क्योंकि यह होशे की सेवकाई के आरंभ में हुआ, इसलिए इन भविष्यवाणियों ने तुलनात्मक रूप से सीमित दंडों की चेतावनी दी। उदाहरण के लिए, परमेश्वर के आरंभिक मुक़द्दमे में पद 4:3 इन शब्दों के साथ इस्राएल की अर्थव्यवस्था और भोजन के वितरण के संकट की भविष्यवाणी करता है। "यह देश विलाप करेगा... उसके सब निवासी कुम्हला जाएँगे; और समुद्र की मछलियाँ भी नष्ट हो जाएँगी।" पद 4, 5 में परमेश्वर ने पूरे राष्ट्र की अपेक्षा मुख्य रूप से इस्राएल के अगुवों पर ध्यान केंद्रित किया, और याजकों, भविष्यवक्ताओं, और उनकी माता को संबोधित किया, जिनमें यह अंतिम संबोधन उनके कुलीन लोगों के लिए है। परमेश्वर पद 6 में यह कहते हुए फिर से याजकों को संबोधित करता है, "मैं तुझे अपना

याजक रहने के अयोग्य ठहराऊँगा।" पद 7 में उसने घोषणा की, "मैं उनके वैभव," अर्थात् इस्राएल की समृद्धि — "के बदले उनका अनादर करूँगा।" और उसने पद 10 में एक बार फिर से योजकों को दंड देने की चेतावनी दी जब उसने यह कहा, "वे खाएँगे तो सही, परन्तु तृप्त न होंगे।" और पद 14 में इस आरंभिक अवस्था में ही परमेश्वर ने बहुत ही महत्वपूर्ण रूप में अपने दंड को सीमित कर दिया। उसने कहा, व्यभिचार में सम्मिलित रहने के कारण मैं तुम्हारी बेटियों और तुम्हारी बहुओं को "दण्ड न दूँगा," क्योंकि उनके इस दुर्व्यवहार की मुख्य जिम्मेदारी पिताओं और पतियों की थी। पद 16 में होशे ने कहा कि परमेश्वर "भेड़ के बच्चे के समान लम्बे-चौड़े मैदान में" उन्हें न चराएगा। इसकी अपेक्षा, पद 19 के अनुसार, "उनकी आशा टूट जाएगी।"

लगभग इसी प्रकार परमेश्वर के बाद के मुक़द्दमे ने पद 5:2 में यह कहते हुए इस्राएल के अगुवों को संबोधित किया, "मैं उन सभों को ताड़ना दूँगा।" और पद 5 दर्शाता है कि उत्तरी राज्य के लिए और अधिक परेशानियाँ आने वाली थीं। यहाँ हम पढ़ते हैं कि इस्राएल अपने अधर्म के कारण ठोकर खाएगा।

अब जैसे कि हम देख चुके हैं, चेतावनी के लिए परमेश्वर की बुलाहटें होशे के सामने बाद में प्रकट हुईं जब उसने 722 ईसा पूर्व में अश्शूरी आक्रमण की भविष्यवाणी की — अर्थात् उस आक्रमण की जो शोमरोन के पतन का कारण बना। अतः जैसे कि अपेक्षा करनी चाहिए, इस्राएल के पाप के प्रति परमेश्वर के दंड इन भविष्यवाणियों में और अधिक कठोर थे। चेतावनी की पहली बुलाहट में पद 5:9 घोषणा करता है कि इस्राएल "उजाड़ हो जाएगा।" पद 11 में, इस्राएल "पर अन्धेर किया गया है, वह मुक़द्दमा हार गया है।" पद 13 के अनुसार अश्शूर के साथ इस्राएल का गठजोड़ उनकी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता। और पद 14 में परमेश्वर ने यह कहते हुए प्रतिज्ञा के देश से निर्वासन की चेतावनी दी, "जब मैं उठा ले जाऊँगा, तब मेरे पंजे से कोई न छुड़ा सकेगा।" अब, परमेश्वर द्वारा इस्राएल के विरुद्ध अपनी चेतावनियों को बढ़ा देने पर भी पद 7:1 में परमेश्वर ने माना कि वह अब भी इस्राएल को चंगा करेगा। परंतु इस्राएल ने उसके विरुद्ध अपने विद्रोह को जारी रखा। जैसे कि पद 10 कहता है, "इन सब बातों के रहते हुए भी वे अपने परमेश्वर यहोवा की ओर नहीं फिरे, और न उसको ढूँढ़ा है।" अतः पद 13 में परमेश्वर ने घोषणा की, "उन पर हाय... उनका सत्यानाश हो।" इसी पद में परमेश्वर ने फिर से पुष्टि की, "मैं तो उन्हें छुड़ाता रहा," परंतु उन्होंने अपने पापपूर्ण आचरण को जारी रखा। और फलस्वरूप, पद 16 हमें बताता है कि "उनके हाकिम... तलवार से मारे जाएँगे।"

चेतावनी के लिए परमेश्वर की दूसरी बुलाहट जिसे मूल रूप से 722 ईसा पूर्व के आक्रमण के आस-पास प्राप्त किया गया, पद 8:3 में घोषणा करती है कि "शत्रु [इस्राएल के] पीछे पड़ेगा।" पद 6 और 7 घोषणा करते हैं कि "शोमरोन का वह बछड़ा टुकड़े टुकड़े हो जाएगा... और [इस्राएली] बवण्डर लवेंगे।" फिर पद 8 कहता है कि अश्शूर के द्वारा "इस्राएल निगला गया।" और पद 10 प्रकट करता है कि इस्राएल के अगुवे अश्शूर के "बोझ के कारण घटने लगेंगे।" और इससे परे होशे ने पद 13 में यह कहते हुए एक आगामी अश्शूरी निर्वासन का उल्लेख किया कि इस्राएली "मिस्र में लौट जाएँगे।" जैसे परमेश्वर पद 9:3 में कहता है, "वे यहोवा के देश में रहने न पाएँगे... एप्रैम मिस्र में लौट जाएगा, और वे अश्शूर में अशुद्ध वस्तुएँ खाएँगे।" इस्राएल की पराजय इतनी बड़ी होगी कि पद 6 में परमेश्वर ने कहा, "मिस्री उनके शव इकट्ठा करेंगे; और... उनको मिट्टी देंगे।" और जैसे कि पद 7 में होशे ने शोमरोन के पतन की बहुत ही निकट भविष्यवाणी की, "दण्ड के दिन... बदला लेने के दिन आए हैं।"

> अश्शूरी आक्रमण लोगों के पापों के कारण यहोवा की ओर से एक दंड था, यह इसलिए भी था कि उन्होंने यहोवा और यहोवा की विधियों को त्याग दिया था। होशे की पुस्तक में हम भविष्यवक्ता को अश्शूरी निर्वासन के बारे में और अधिक विवरण को देते हुए देखते हैं। पद 9:7 में भविष्यवक्ता कहता है : "दण्ड के दिन आए हैं; बदला लेने के दिन आए हैं; और इस्राएल यह जान लेगा। उनके बहुत से अधर्म और बड़े द्वेष के कारण भविष्यद्वक्ता तो मूर्ख, और जिस पुरुष पर आत्मा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> उतरता है, वह बावला ठहरेगा।" वह यहाँ दावा करता है कि "दण्ड के दिन" और "बदला लेने के दिन" आ गए थे, जो अश्शूरी निर्वासन को दिखाते हैं।
>
> उसी अध्याय — पद 9:15 — में हम इन वचनों को पढ़ते हैं : "उनकी सारी बुराई गिलगाल में है; वहीं मैं ने उनसे घृणा की। उनके बुरे कामों के कारण मैं उनको अपने घर से निकाल दूँगा। उनसे फिर प्रीति न रखूँगा, क्योंकि उनके सब हाकिम बलवा करनेवाले हैं। विद्रोह, अनाज्ञाकारिता, और बुराई के कारण इस्राएल के लोगों के लिए निर्वासन आया, या आएगा।
>
> अंततः इसी अध्याय — पद 9:17 — में यह कहता है : "मेरा परमेश्वर उनको निकम्मा ठहराएगा, क्योंकि उन्होंने उसकी नहीं सुनी। वे जाति-जाति के बीच मारे मारे फिरेंगे।" निर्वासन से पहले होशे सहित कई भविष्यवक्ताओं ने बहुत से निमंत्रण दिए थे, जिन्हें परमेश्वर द्वारा लोगों के पास उन्हें वापस बुलाने और मन फिराने की बुलाहट देने के लिए भेजा गया था। परंतु लोगों ने आज्ञा नहीं मानी और फलस्वरूप निर्वासन यहोवा की ओर से लोगों के लिए एक दंड था, क्योंकि वे यहोवा के विरुद्ध जानबूझकर विद्रोह करते रहे।
>
> — रेव्ह. शेरिफ गेंडी, अनुवाद

जैसे कि हम अब तक देख चुके है, इस विभाजन के मूल अर्थ ने परमेश्वर के समक्ष इस्राएल के विद्रोह पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित किया। परंतु अपने दूसरे विभाजन में होशे ने यहूदा के विद्रोह को भी प्रकट किया।

यहूदा का विद्रोह

परमेश्वर के प्रकट होने वाले दंड के बारे में होशे के दूसरे विभाजन के प्रकाशनों के हमारे सारांश के अंत को एक बार फिर से सुनें :

> ... अब यहूदा भी वैसे ही दंड का सामना करता है [जैसा इस्राएल ने किया] क्योंकि उन्होंने भी विद्रोह किया है।

आपको याद होगा कि पहले विभाजन में होशे ने यहूदा के बारे में केवल सकारात्मक बातें ही कही थीं। परंतु इस विभाजन में होशे ने दर्शाया कि इन वर्षों में यहूदा इस्राएल के समान बन गया था। अन्य भविष्यवक्ताओं की बातों, और जो स्वयं होशे ने कहा, उनसे हम जानते हैं कि इस्राएल के समान यहूदा ने भी परमेश्वर की वाचा और व्यवस्था को त्याग दिया था। इस्राएल के समान वे व्याप्त मूर्तिपूजा में शामिल हो रहे थे, प्रजनन संबंधी धर्म की वेश्यावृत्ति और व्यभिचार को अपना रहे थे, तथा पाखंड के साथ आराधना कर रहे थे। और इन्हीं कारणों से अब यहूदा भी ईश्वरीय दंड का सामना कर रहा था।

जैसा कि हम जानते हैं, परमेश्वर के प्रकट होने वाले दंड पर होशे का ध्यान परमेश्वर के दो मुक़द्दमों के साथ आरंभ हुआ। 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के विषय में परमेश्वर का पहले का मुक़द्दमा तब हुआ जब या तो उज्जिय्याह ने या योताम ने यहूदा में धर्मी राजाओं के रूप में शासन किया। अतः दूसरे विभाजन के आरंभिक खंड में भी हम यहूदा के विषय में सकारात्मक शब्दों को पाते हैं। वास्तव में परमेश्वर ने इस्राएल और यहूदा के राज्यों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर को प्रकट किया। पद 4:15 में परमेश्वर ने कहा, "हे इस्राएल, यद्यपि तू छिनाला करता है, तौभी यहूदा दोषी न बने। इस पहले के मुक़द्दमे में परमेश्वर ने यहूदा को उत्तरी राज्य के समान न बनने की चेतावनी दी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परंतु परमेश्वर के बाद के उस मुक़द्दमे के विषय में ऐसा नहीं कहा जा सकता जो होशे के समक्ष तब प्रकट हुआ जब अश्शूर का 732 ईसा पूर्व का आक्रमण निकट आ रहा था। होशे की सेवकाई के इस चरण में आहाज ने यहूदा पर शासन करना आरंभ कर दिया था। आहाज ने मूर्तिपूजा और अन्याय को बढ़ावा दिया और अपने शत्रुओं से सुरक्षा प्राप्त करने के लिए अश्शूर और अश्शूर के देवताओं के साथ गठजोड़ पर भरोसा किया। अतः पद 5:5 में परमेश्वर ने अपने दंड की घोषणा की कि "[इस्राएली]... अपने अधर्म के कारण ठोकर खाएँगे, और यहूदा भी उनके संग ठोकर खाएगा।" और वास्तव में यहूदा ने कई तरह से दुःख उठाया जब इस दौरान अरामी-इस्राएली गठजोड़ हुआ।

चेतावनी के लिए परमेश्वर की बुलाहटों के विषय में होशे के प्रकाशनों ने भी यहूदा की परिस्थितियों को संबोधित किया। आपको याद होगा कि चेतावनी की पहली बुलाहट में होशे ने 722 ईसा पूर्व में इस्राएल पर अश्शूर के आक्रमण के विषय में भविष्यवाणी की थी। पूरी संभावना है कि आहाज इस समय भी यहूदा का राजा था। और पद 5:10 में हम यह पढ़ते हैं, "यहूदा के हाकिम उनके समान हुए हैं जो सीमा बढ़ा लेते हैं।" बहुत से व्याख्याकार मानते हैं कि यह अनुच्छेद अरामी-इस्राएली गठजोड़ के दौरान हुए इस्राएल के आक्रमणों का बदला लेने के लिए आहाज द्वारा बिन्यामीन के क्षेत्रों को हड़प लेने के प्रयास को दर्शाता है। यदि यह व्याख्या सही है, तो परमेश्वर के लोगों के कल्याण की खोज करने की अपेक्षा यहूदा ने इस्राएल के भूमि-उत्तराधिकार से संबंधित अधिकारों का उल्लंघन किया। और इसके प्रत्युत्तर में, पद 10-14 में परमेश्वर ने यह कहते हुए यहूदा को चेतावनी दी, "मैं उन पर अपनी जलजलाहट जल के समान उण्डेलूँगा... मैं... यहूदा के घराने के लिये सड़ाहट के समान हूँगा... यहूदा के घराने के लिये जवान सिंह बनूँगा। मैं आप ही उन्हें फाड़कर ले जाऊँगा; जब मैं उठा ले जाऊँगा, तब मेरे पंजे से कोई न छुड़ा सकेगा।" इन वचनों के साथ होशे ने सन्हेरिब के आक्रमण के आतंकों की भविष्यवाणी की जो 701 ईसा पूर्व यहूदा पर आएगा। परमेश्वर ने यहूदा पर इस समय अपनी कपटता के द्वारा परमेश्वर की परीक्षा करने का आरोप भी लगाया जब उसने पद 6:4 में यहूदा से पूछा, "हे यहूदा, मैं तुझ से क्या करूँ? तुम्हारा स्नेह तो भोर के मेघ के समान, और सबेरे उड़ जानेवाली ओस के समान है।" और परमेश्वर ने पद 11 में यहूदा के विरुद्ध दंड की चेतावनी दी जब उसने यह कहा, "हे यहूदा... तेरे निमित्त भी बदला ठहराया हुआ है।" पूरी संभावना है कि यहूदा के लिए ठहराया हुआ "बदला" अश्शूरियों के हाथों सहे जाने वाले कष्ट थे।

अब ध्यान दीजिए कि परमेश्वर ने चेतावनी की अपनी दूसरी बुलाहट में यहूदा के विषय में क्या कहा था जब 722 ईसा पूर्व में शोमरोन का विनाश और अधिक निकट आ गया था। यह शायद उस समय था जब आहाज और हिजकिय्याह यहूदा में सह-शासक थे। पद 8:14 में परमेश्वर ने ध्यान दिया कि "यहूदा ने बहुत से गढ़वाले नगरों को बसाया है।" यह अश्शूर के विरुद्ध यहूदा को मजबूत करने के हिजकिय्याह के प्रयासों का उल्लेख है। निस्संदेह मजबूत गढ़ों का निर्माण करना अपने आप में पापमय नहीं था। परंतु हिजकिय्याह द्वारा गढ़ों का निर्माण करना परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह का प्रतीक था क्योंकि गढ़ों का निर्माण करने के अतिरिक्त उसने मिस्र और मिस्र के देवताओं के साथ गठजोड़ करने के द्वारा अश्शूर से सुरक्षित रहने का भी प्रयास किया। फलस्वरूप, परमेश्वर ने यह कहते हुए पद 14 में दंड की चेतावनी दी, "मैं उनके नगरों में आग लगाऊँगा।" यह चेतावनी तब पूरी हुई जब सन्हेरिब ने 701 ईसा पूर्व में यहूदा पर आक्रमण किया।

जब होशे ने दंड के प्रकट होने की भविष्यवाणियों को सबसे पहले प्राप्त किया, तो उसने पहले इस्राएल में और बाद में यहूदा में प्रत्यक्ष रूप से और बार-बार पश्चाताप की आवश्यकता को संबोधित किया। उसकी सेवकाई दशकों तक चलती रही क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों के प्रति निरंतर धैर्य रखना जारी रखा। परंतु दुखद रूप से, इस्राएल का विद्रोह केवल बढ़ता ही गया। और 722 ईसा पूर्व में परमेश्वर ने उस दंड को भेजा जिसकी उसने उन्हें चेतावनी दी थी। अश्शूर के द्वारा उत्तरी राज्य को नष्ट कर दिया गया, और उसके लोगों को निर्वासन में भेज दिया गया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बाद में जब होशे ने हिजकिय्याह के समय में अपनी पुस्तक की रचना की, तो यहूदा भी विनाश और निर्वासन की वैसी ही चेतावनी का सामना कर रहा था। इस वास्तविकता के प्रकाश में प्रकट होने वाले दंड के विषय में होशे की भविष्यवाणियों ने यहूदा के अगुवों को दी महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टियाँ प्रदान कीं। एक ओर, निस्संदेह उसकी भविष्यवाणियों ने दर्शाया कि परमेश्वर उत्तरी राज्य को दी गई अपनी कठोर ताड़ना में बहुत अधिक धैर्यवान और न्यायी बना रहा था। कोई भी सही रूप में परमेश्वर द्वारा शोमरोन के संपूर्ण विनाश और उत्तरी गोत्रों के निर्वासन पर सवाल नहीं उठा सकता। और दूसरी ओर, होशे की भविष्यवाणियों ने यहूदा के अगुवों को भी उनके अपने राज्य की परिस्थिति में एक नजरिया प्रदान किया। परमेश्वर ने यहूदा की सुरक्षा की थी जब वे उज्जिय्याह और योताम के शासनकाल के दौरान उसके प्रति विश्वासयोग्य रहे थे। परंतु आहाज और हिजकिय्याह धार्मिकता के मार्ग से हट गए थे और हिजकिय्याह के समय में यहूदा के अगुवों को बुद्धि की एक बड़ी जरूरत में डाल दिया था — अर्थात् एक कठिन और गंभीर बुद्धि की जरूरत में। यहूदा इस्राएल के समान बन गया था, और अब वे परमेश्वर के दंड से सुरक्षित नहीं थे।

परमेश्वर के प्रकट होने वाले दंड के विषय में इन अध्यायों के मूल अर्थ को देख लेने के बाद, आइए इस विभाजन के आधुनिक प्रयोग पर विचार करें। ये प्रकाशन आज हमारे जीवनों को कैसे प्रभावित करते हैं?

आधुनिक प्रयोग

दुखद रूप में, बहुत से सुसमाचारिक मसीहियों को होशे के दूसरे विभाजन से बुद्धि की बातों को समझने में कठिनाई होती है, क्योंकि यह परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध उसके आरोपों और दंडों पर बहुत अधिक ध्यान देती है। अक्सर हम सोचते हैं कि इन विषयों का हमसे कोई लेना-देना नहीं है क्योंकि मसीह ने हमें अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा परमेश्वर के दंड से छुड़ा दिया है। अब, हम जानते हैं कि स्वर्ग के न्याय-कक्ष में मसीह की धार्मिकता केवल विश्वास के द्वारा सच्चे विश्वासियों को प्रदान की गई है। और इस धार्मिकता ने परमेश्वर के अनंत दंड से प्रत्येक सच्चे विश्वासी कोछुटकारा प्रदान कर दिया है। ये मसीही सुसमाचार के आवश्यक पहलू हैं। परंतु होशे की दूसरे विभाजन में प्रकट बुद्धि को अपने जीवनों में लागू करने के लिए हमें उन कई अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं को भी ध्यान में रखना होता है जिन्हें नया नियम सिखाता है।

यह होशे के दूसरे विभाजन के आधुनिक प्रयोग को समझने में सहायता करेगा, जैसे हमने उसके पहले विभाजन को समझा था। हम विचार करेंगे कि नया नियम मसीह की दुल्हन के बारे में क्या सिखाता है। फिर हम मसीह में अंत के दिनों की पूर्णता को देखेंगे। आइए पहले मसीह की दुल्हन के रूप में कलीसिया के विषय में देखें।

मसीह की दुल्हन

जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले देखा था, हमेशा से परमेश्वर की एक ही दुल्हन या प्रजा रही है क्योंकि नए नियम की कलीसिया पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों से निकली है। परंतु यह समझने के लिए कि परमेश्वर के प्रकट होने वाले दंड के विषय में होशे के प्रकाशन आज हम पर कैसे लागू होते हैं, हमें एक अन्य संबंध को दर्शाने की आवश्यकता है। मसीही कलीसिया, और इस्राएल तथा यहूदा में परमेश्वर के दृश्य लोगों और परमेश्वर के अदृश्य लोगों के बीच अक्सर एक भिन्नता दर्शाई जाती है।

रोमियों 2:28, 29 में पुराने नियम के इस्राएल के संदर्भ में प्रेरित पौलुस ने यह अंतर स्पष्ट किया। उसने कहा, "क्योंकि यहूदी वह नहीं जो प्रगट में यहूदी है..." — या "दृश्य रूप में," क्योंकि इसका ऐसे भी अनुवाद किया जा सकता है — "पर यहूदी वही है जो मन में है" — या "अदृश्य रूप में।" और इस

कारण, प्रकट होने वाले दंड पर होशे के मुख्य ध्यान ने परमेश्वर की पुराने नियम की दुल्हन, अर्थात् इस्राएल और यहूदा, के अविश्वासियों और सच्चे विश्वासियों दोनों को संबोधित किया।

लगभग इसी रूप में मसीही धर्मविज्ञानियों ने अक्सर दृश्य कलीसिया और अदृश्य कलीसिया में अंतर किया है। नए नियम के समय में दृश्य कलीसिया में वह सब शामिल होते हैं जो मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करते हैं, उनकी संतान शामिल होती है और वे सब भी शामिल होते हैं जो मसीही विश्वास के साथ निकटता से संबंधित होते हैं। परंतु अदृश्य कलीसिया, दृश्य कलीसिया के भीतर वह एक विशेष समूह है जिसमें वे लोग शामिल होते हैं जो मसीह के उद्धार देने वाले विश्वास को ग्रहण कर चुके हैं या ग्रहण करेंगे। इसलिए जिस प्रकार होशे ने प्राचीन इस्राएल और यहूदा के अविश्वासियों और सच्चे विश्वासियों दोनों को संबोधित किया था, उसी प्रकार हमें भी अपने समय में मसीह की संपूर्ण दृश्य दुल्हन के प्रति परमेश्वर के प्रकट होने वाले दंड के होशे के प्रकाशनों को लागू करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

> हम धर्मविज्ञान और इतिहास दोनों में दृश्य कलीसिया के बारे में और अदृश्य कलीसिया के बारे में बात करते हैं। दृश्य कलीसिया को सामान्यतः मसीह की देह की स्थानीय अभिव्यक्ति के रूप में दर्शाया जाता है। इसमें सच्चे मसीही और ऐसे लोग होते हैं जो सोचते हैं कि वे मसीही हैं। अदृश्य कलीसिया सब समयों, और सब स्थानों के, अर्थात् स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर के लोग होंगे — वे लोग जो हमेशा से परमेश्वर के लोग रहे हैं — यह अदृश्य कलीसिया है क्योंकि ऐसे बहुत से सदस्य हैं, उनमें से बहुत से लोग हैं जिन्हें हम वर्तमान में नहीं देख सकते। वे स्वर्ग में परमेश्वर के साथ हैं, या वे संसार के अन्य स्थानों में हैं। दृश्य कलीसिया वह है जिसे हम सामान्यतः स्थानीय कलीसिया, या बहुत सी कलीसियाओं को एकत्रित होते समय देखते हैं, जब मसीही एक साथ संगति करते हैं। परंतु यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अदृश्य कलीसिया में हमेशा "गेहूँ और जंगली पौधे" भी होंगे, जैसा कि यीशु ने कहा था। आपके पास परमेश्वर के सच्चे लोग होंगे; आपके पास ऐसे लोग होंगे जो ऐसे प्रतीत हों, जिस प्रकार ऐसे चेले थे जो यीशु के प्रति विश्वासयोग्य थे, पर उनमें यहूदा भी था। पौलुस के चेलों में से एक देमास भी था।
>
> — डॉ. डोनाल्ड एस. व्हिटनी

अपने मन में मसीह की दुल्हन की वर्तमान असिद्धता को रखते हुए आइए मसीह में अंत के दिनों के दौरान कलीसिया के प्रति प्रकट होने वाले दंड की होशे की भविष्यवाणियों के आधुनिक प्रयोग के बारे में सोचें।

मसीह में अंत के दिन

जैसा कि हम पहले से उल्लेख कर चुके हैं, मसीह तीन चरणों में अंत की आशीषों को लेकर आता है : अपने राज्य का उद्घाटन, उसकी निरंतरता और उसकी पूर्णता। नया नियम स्पष्ट रूप से सिखाता है कि राज्य की *पूर्णता* के समय मसीह की दुल्हन को पवित्र किया जाएगा जब मसीह का महिमा में पुनरागमन होगा। मसीह कलीसिया में पाए जानेवाले उन अविश्वासियों पर अनंत दंड को उंडेलेगा जिन्होंने कभी मन नहीं फिराया और न ही उद्धार देने वाले विश्वास को क्रियान्वित किया। और वह बड़े अनुग्रह के साथ अनंत आशीषों को कलीसिया के सच्चे विश्वासियों पर उंडेलेगा। उस समय मसीह की दुल्हन को परमेश्वर के आरोपों और दंडों को सुनने की आवश्यकता फिर नहीं होगी।

परंतु मसीह के राज्य के उद्घाटन और आगे बढ़ने के दौरान परिस्थिति बहुत ही अलग है। अपने पहले आगमन में यीशु ने अपनी दुल्हन को सिद्ध नहीं किया था। और उसकी दुल्हन असिद्ध बनी रहेगी जब

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसका राज्य पूरे कलीसियाई इतिहास में आगे बढ़ता रहता है। अतः जब तक मसीह की दुल्हन उसके महिमामय पुनरागमन पर सिद्ध नहीं हो जाती, तब तक परमेश्वर के आरोप और दंड संपूर्ण दृश्य कलीसिया पर लागू होना जारी रहेंगे।

निस्संदेह हमें हमेशा यह याद रखना है कि परमेश्वर ने मसीह में अपने आप को और अधिक प्रकट किया है। अतः होशे की भविष्यवाणियों की बुद्धि की बातें हमेशा नए नियम के प्रकाशन के प्रकाश में लागू की जानी चाहिए। सुनिए किस प्रकार स्वयं यीशु ने लूका 24:46-47 में यह किया जब उसने अपने पुनरुत्थान को मन फिराव के साथ जोड़ा। यीशु ने अपने चेलों से कहा :

> "यों लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा (लूका 24:46-47)।

यहाँ यीशु ने परमेश्वर के नए नियम के प्रकाशन के प्रकाश में होशे 6:1, 2 को स्वयं पर लागू किया। होशे ने घोषणा की थी कि यदि इस्राएल सच्चाई से मन फिराए और प्रभु के पास लौट आए तो इस्राएल के लिए आशीषें जल्दी, या "तीसरे दिन" आएँगी। और यीशु ने इसे तीसरे दिन के अपने पुनरुत्थान और मन फिराव के लिए अपनी बुलाहट पर लागू किया। एक और उदाहरण के लिए मत्ती 9:13 को सुनें, और यह भी कि कैसे यीशु ने होशे की भविष्यवाणिय बुद्धि को पहली सदी के पाठकों पर लागू किया। यीशु ने कहा :

> इसलिये तुम जाकर इसका अर्थ सीख लो : 'मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ।' क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ (मत्ती 9:13)।

'मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ' की अभिव्यक्ति होशे 6:6 से ली गई है जहाँ होशे ने इस्राएल पर पाखंडी आराधना का आरोप लगाया। और यीशु ने अपने समय के यहूदियों के पाखंड को उजागर करने के लिए होशे के वचनों का प्रयोग किया।

यीशु के उदाहरण से यह स्पष्ट है कि होशे का दूसरा विभाजन मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान मसीह की दृश्य दुल्हन में सब पर लागू होता है। और होशे के समय के समान परमेश्वर अपनी दुल्हन पर अस्थाई आशीषों और अस्थाई दंडों को उंडेलना जारी रखता है। दृश्य कलीसिया के अविश्वासी और सच्चे विश्वासी दोनों कठिनाइयों, प्राकृतिक आपदाओं, बीमारियों, युद्ध, सताव, भौतिक मृत्यु आदि के रूप में अस्थाई दंडों का सामना करते हैं। और जैसे कि नया और पुराना नियम दोनों दर्शाते हैं, परमेश्वर विविध कारणों से इन दंडों को भेजता है। कई बार वह इन्हें हमारे कार्यों के प्रत्युत्तर के रूप में भेजता है। और कई बार वे हमारे साथ जुड़े अन्य लोगों के कार्यों के प्रति परमेश्वर के प्रत्युत्तर होते हैं। और निस्संदेह मसीह के महिमा में पुनरागमन तक दृश्य कलीसिया परमेश्वर के अस्थाई दंडों का अनुभव केवल इसलिए करती है क्योंकि सृष्टि अब भी आदम के पाप के शाप में फंसी हुई है।

इसी कारण इस्राएल और यहूदा के विरुद्ध होशे के आरोप और दंड की चेतावनियाँ आज भी हमें बुद्धि की बहुत सी बातें सिखाती हैं। हम शायद परमेश्वर की वाचा और व्यवस्था का वैसे उल्लंघन करने की परीक्षा में नहीं पड़ते जैसे होशे के दिनों में परमेश्वर के लोगों ने किया था। परंतु हमें परमेश्वर की वाचा और व्यवस्था के प्रति मसीह में नई वाचा में रहनेवाले लोगों के रूप में विश्वासयोग्य बनना जरूरी है। हम शायद व्यापक मूर्तिपूजा नहीं कर रहे होंगे जैसी वे होशे के समय में करते थे, परंतु हमें अपने समय में हर प्रकार की मूर्तिपूजा से बचना जरूरी है। हम शायद अपने आप को वेश्यावृत्ति और प्राचीन कनानी प्रजनन संबंधी आराधना के व्यभिचार में लिप्त नहीं रहे हों, परंतु हमें लैंगिक अनैतिकता के हर प्रारूप से दूर रहना है। और यद्यपि हम इस्राएल और यहूदा के समान पाखंडी आराधना में भी शामिल नहीं होते हैं, फिर भी परमेश्वर चाहता है कि हम सच्चे मन फिराव और सच्ची भक्ति में उसके पास आएँ।

नए नियम के प्रकाशन के प्रकाश में देखने पर वह प्रत्येक आरोप और दंड जो परमेश्वर इस्राएल और यहूदा के विरुद्ध लेकर आया, हमें इस विषय में बुद्धि प्रदान करता है कि आज हमें कैसे जीवन जीना चाहिए। अतः जब हम परमेश्वर के अस्थाई दंडों का सामना करते हैं तो हमें स्वयं को नम्र करना चाहिए, अपने पापों से मन फिराना चाहिए और मसीह में अपने विश्वास को नया बनाना चाहिए।

अब जबकि हमने दंड और आशा तथा प्रकट होने वाले दंड के प्रति बुद्धिमानी से व्यवहार करने के होशे के प्रकाशनों का अध्ययन कर लिया है, तो हम बुद्धि की उन बातों की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं जिन्हें होशे ने हमारी पुस्तक के तीसरे विभाजन में परमेश्वर की प्रकट होने वाली आशा के विषय में भविष्यवाणियों में प्रदान किया था।

प्रकट होने वाली आशा

अपनी पुस्तक के पहले विभाजन में होशे ने स्पष्ट किया कि दंड की अवधि के बाद इस्राएल और यहूदा अंत के दिनों में यहूदा के घराने के शासन के अधीन फिर से एक हो जाएँगे। परंतु दूसरे विभाजन में होशे ने उन कई दशकों में प्राप्त भविष्यवाणियों को प्रस्तुत किया, जिन्होंने स्पष्ट किया कि क्यों परमेश्वर इस्राएल में विनाश को लाने में सही था, और क्यों वह यहूदा के विरुद्ध भी दंड ला रहा था। इन कड़वी सच्चाइयों ने शायद यहूदा के अगुवों के मनों को तोड़ डाला होगा जिन्होंने सबसे पहले होशे की पुस्तक को प्राप्त किया था। क्या सब कुछ खो गया था? क्या इस्राएल और यहूदा इन परिस्थितियों को बदलने के लिए कुछ कर सकते थे? हमारी पुस्तक के तीसरे विभाजन ने इन प्रश्नों का उत्तर दिया। होशे ने प्रकाशनों के एक और समूह को प्रस्तुत किया जिसे उसने अपनी पूरी सेवकाई में प्राप्त किया था। और उसने यह उन लोगों के लिए प्रस्तुत किया जिन्होंने परमेश्वर की आशीषों की ओर बढ़नेवाले बुद्धि के मार्ग की चाहत की थी।

हम परमेश्वर की ओर से प्रकट होने वाली आशा की होशे की प्रस्तुति का अध्ययन वैसे ही करेंगे जैसे हमने उसकी पुस्तक के अन्य विभाजनों का अध्ययन किया है। हम इसके मूल अर्थ पर ध्यान देंगे। और फिर हम इसके आधुनिक प्रयोग की ओर मुड़ेंगे। इसलिए वह मूल अर्थ क्या था जो वह यहूदा के उन अगुवों को समझाने की आशा कर रहा था जिन्होंने सबसे पहले इस पुस्तक को प्राप्त किया था।

मूल अर्थ

होशे अपनी पुस्तक के अंतिम विभाजन में प्रकाशनों को इस प्रकार सारगर्भित कर सकता था :

> अंत के दिनों के लिए परमेश्वर की आशीषों की आशा अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के अनुग्रहकारी प्रत्युत्तरों में पाई जाती है, परंतु ये आशीषें तभी आएँगी जब परमेश्वर के लोग उसके दंडों के प्रति उचित प्रत्युत्तर देते हैं।

इन अध्यायों में होशे ने दो दृष्टिकोणों को स्थापित करने के लिए अपनी पूरी सेवकाई से भविष्यवाणियों को एकत्रित किया। पहला, अपने लोगों के पापों के प्रति परमेश्वर के अनुग्रहकारी प्रत्युत्तरों के कारण अंत के दिनों की परमेश्वर की आशीषों के लिए अब भी आशा थी। परंतु दूसरा, होशे की भविष्यवाणियों ने यह भी स्पष्ट किया कि अंत के दिनों की आशीषें तभी आएँगी जब परमेश्वर के लोग उसके दंडों के प्रति उचित प्रत्युत्तर देंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आइए उसके तीसरे विभाजन में होशे के मूल अर्थ के दोनों पहलुओं को देखें — पहला, अपने लोगों के पापों के प्रति परमेश्वर के प्रत्युत्तरों को, और फिर परमेश्वर के प्रति लोगों के प्रत्युत्तरों को। सबसे पहले, होशे परमेश्वर के लोगों के पापों के प्रति परमेश्वर के प्रत्युत्तरों से यहूदा के लोगों को क्या सिखाना चाहता था?

परमेश्वर के प्रत्युत्तर

आपको याद होगा कि प्रकट होने वाली आशा पर आधारित होशे के अध्याय पांच मुख्य खंडों में विभाजित होते हैं। पद 9:10-12 में फल के साथ इस्राएल की तुलना होशे के पास तब आई जब उसने 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के विषय में अपनी आरंभिक भविष्यवाणियों को प्राप्त किया था। पद 9:13-17 में बसे हुए स्थान और पद 10:1-10 में लहलहाती हुई दाखलता के साथ उसकी तुलना भी 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के विषय में की गई भविष्यवाणियों से आई है। पद 10:11-15 में सीखी हुई बछिया से तुलना और पद 11:1–14:8 में प्रिय पुत्र के साथ अंतिम तुलना तब प्रकट हुई जब होशे ने 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के विषय में भविष्यवाणियों को प्राप्त किया।

हम अपनी पुस्तक के इस विभाजन में कुछ महत्वपूर्ण बात को देखने पर हैं। होशे ने अतीत में इस्राएल के साथ परमेश्वर के संबंध पर आधारित उसके चिंतनों के साथ इन खंडों को आरंभ किया। और इन चिंतनों ने प्रकट किया कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएल के प्रति अनुग्रह के साथ प्रत्युत्तर दिया था, तब भी जब वह उनके विरुद्ध दंड की चेतावनी दे रहा था। अक्सर हम सोचते हैं कि परमेश्वर के लिए एक ही समय में क्रोधित और दयाशील होना असंभव है। परंतु होशे ने अपनी पुस्तक के इस भाग की रचना यह प्रकट करने के लिए की कि यह सच नहीं था। जब परमेश्वर ने अपने दंडों को प्रकट किया, तो उसने इस्राएल के प्रति अपने अनुग्रह को भी प्रकट किया। और इसने होशे की पुस्तक को सबसे पहले प्राप्त करनेवालों को अपने समय की चुनौतियों के लिए एक स्थिर बुद्धि प्रदान की।

फल - होशे ने पद 9:10-12 में फल के साथ उत्तरी इस्राएल की परमेश्वर द्वारा तुलना का प्रयोग करते हुए इन दृष्टिकोणों का परिचय दिया। ये पद दर्शाते हैं कि कैसे अतीत के विषय में परमेश्वर के चिंतनों ने इस्राएल के पापों के प्रति उसके अनुग्रहकारी प्रत्युत्तर को दर्शाया। हम पद 10 में इस्राएल के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह को देखते हैं जहाँ परमेश्वर ने याद किया कि इस्राएल "जंगल में दाख" और "अंजीर के पहले फलों" के समान रहा था। यहाँ परमेश्वर ने दर्शाया कि कैसे उसने उन दिनों में इस्राएल का आनंद उठाया जब मूसा ने जंगल में उनकी अगुवाई की थी। और उसने बताया कि अनुग्रह से भरा यह समय तब भी समाप्त नहीं हुआ जब उसने 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण की घोषणा की।

ये पद इस्राएल के साथ परमेश्वर के धीरज को भी दर्शाते हैं। पद 10 में परमेश्वर ने उल्लेख किया कि इस्राएल की मूर्तिपूजा और वेश्यावृत्ति बहुत पहले शुरू हो गई थी। जैसे कि उसने कहा, "तुम्हारे पुरखाओं [ने] पोर के बाल के पास जाकर अपने को लज्जा का कारण होने के लिये अर्पण कर दिया।" जैसा कि हम गिनती 25 में पढ़ते हैं, मूसा के दिनों में इस्राएली पुरुषों ने मोआब की मूर्तियों की पूजा की और मोआबी स्त्रियों के साथ प्रजनन संबंधी रीतियों में लिप्त हुए जब वे प्रतिज्ञा के देश की ओर जा रहे थे। अतः इस्राएल की मूर्तिपूजा और वेश्यावृत्ति कोई नई बात नहीं थी। और इस घटना को याद करने के द्वारा परमेश्वर ने दर्शाया कि उसने पीढ़ियों तक इस्राएल के गोत्रों के प्रति बड़ा संयम दिखाया।

बसा हुआ स्थान - पद 9:13-17 में उत्तरी इस्राएल की बसे हुए स्थान के साथ की गई दूसरी तुलना इस्राएल के पापों के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह से भरे प्रत्युत्तरों को भी दर्शाती है। पहला, हम पद 13 में इस्राएल के प्रति परमेश्वर के निरंतर अनुग्रह को देखते हैं जहाँ परमेश्वर ने घोषणा की कि इस्राएल "मनभावने स्थान में बसा हुआ" था। यह तुलना अतीत पर परमेश्वर के चिंतनों को प्रस्तुत करती है जब उसने इस्राएल के गोत्रों को प्रतिज्ञा के देश में "बसाया" था। एक बार फिर से जब परमेश्वर ने 732 ईसा पूर्व

में अश्शूरी आक्रमण में कड़े दंडों की चेतावनी दी, तब भी उसने याद किया कि उसने इस्राएल के प्रति कैसा महसूस किया था।

और इससे बढ़कर, परमेश्वर ने इस्राएल के प्रति अपने धीरज के बारे में भी बात की। पद 15 में हम यह पढ़ते हैं, "उनकी सारी बुराई गिलगाल में है; वहीं मैं ने उनसे घृणा की। यह पद 1 शमूएल 13:8-14 को दर्शाता है जहाँ राजा शाऊल ने यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध बलिदान चढ़ाए। एक बार फिर से, परमेश्वर ने पीढ़ियों तक आराधना के उल्लंघनों को बड़ी दया के साथ सहने के बाद ही इस्राएल के विरुद्ध अश्शूर को लाने का निश्चय किया था।

लहलहाती हुई दाखलता - होशे की सेवकाई के दौरान इस्राएल के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह से भरे प्रत्युत्तर पद 10:1-10 में लहलहाती हुई दाखलता के साथ इस्राएल की तुलना में समान रूपों में प्रकट होते हैं। परमेश्वर ने पद 1 में इस्राएल के प्रति अपने सुचारू अनुग्रह को दिखाया, जब उसने कहा, "इस्राएल एक लहलहाती हुई दाखलता सी है, जिस में बहुत से फल भी लगे... उसके फल बढ़े... उसकी भूमि सुधरी।" परमेश्वर ने दर्शाया कि उसने इस्राएल की बढ़ोतरी और विस्तार को कितना पसंद किया, तब भी जब उसने निश्चय कर लिया था कि वह 722 ईसा पूर्व के अश्शूरी आक्रमण के द्वारा दंड लेकर आएगा।

और एक बार फिर से अतीत पर परमेश्वर के चिंतनों ने इस्राएल के प्रति उसके संयम को प्रकट किया। पद 9 में परमेश्वर ने शाऊल के दिनों का उल्लेख किया। उसने कहा, "हे इस्राएल, तू गिबा" — शाऊल के राज्य की राजधानी — "के दिनों से पाप करता आया है।" परमेश्वर इस्राएल को दंड देने पर था, परंतु यह दंड वह इस्राएलियों की कई पीढ़ियों पर वर्षों तक दया करने के बाद देने वाला था।

सीखी हुई बछिया - इसके बाद, होशे पद 10:11-15 में परमेश्वर द्वारा इस्राएल की सीखी हुई बछिया से तुलना की ओर मुड़ा। इन पदों में इस्राएल के प्रति परमेश्वर के प्रत्युत्तरों ने उनके प्रति परमेश्वर के नियमित अनुग्रह को प्रकट किया। पद 11 के पहले भाग में उसने कहा, "एप्रैम सीखी हुई बछिया है, जो अन्न दाँवने से प्रसन्न होती है, परन्तु मैं ने उसकी सुन्दर गर्दन पर जुआ रखा है।" परमेश्वर ने तब भी बड़ी दया के साथ चिंतन किया कि कैसे इस्राएल एक जीवंत, परिश्रमी बछिया थी, जब उसने उन्हें 722 ईसा पूर्व के अश्शूरी आक्रमण के कष्टों में डाला।

परमेश्वर ने पद 13 में भी इस्राएल के प्रति अपने धीरज को प्रकट किया जब उसने कहा कि इस्राएल ने पीढ़ियों तक "दुष्टता के लिये हल जोता और अन्याय का खेत काटा है; और... धोखे का फल खाया है।" वर्षों तक इन पापों को सहने के बाद ही परमेश्वर अपने दंड को लेकर आया था।

प्रिय बालक - अंततः होशे ने इस्राएल के पापों के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह से भरे प्रत्युत्तरों को तब दर्शाया जब उसने पद 11:1–14:8 में परमेश्वर द्वारा इस्राएल की प्रिय बालक या पुत्र के साथ तुलना के बारे में बताया। फिर से, हम इस्राएल के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह को अतीत के उसके चिंतनों में देखते हैं।

पद 11:1 में परमेश्वर ने स्मरण किया कि "जब इस्राएल बालक था, तब मैं ने उस से प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।" यद्यपि परमेश्वर 722 ईसा पूर्व में अश्शूरियों के द्वारा उत्तरी राज्य को नष्ट करने पर था, फिर भी उसने इस्राएल के प्रति अपने पितारूपी प्रेम को याद किया। जैसे कि उसने बड़ी कोमलता के साथ 11:8 में कहा : "हे एप्रैम, मैं तुझे कैसे छोड़ दूँ? हे इस्राएल, मैं कैसे तुझे शत्रु के वश में कर दूँ?... मेरा हृदय तो उलट-पुलट हो गया, मेरा मन स्नेह के मारे पिघल गया है।"

हम यह भी पाते हैं कि परमेश्वर ने इस खंड में इस्राएल के प्रति अपने धीरज को प्रकट किया। पद 11:2 में परमेश्वर ने शिकायत की कि सदियों से "जितना वे [इस्राएलियों को] बुलाते थे, उतना ही वे भागे जाते थे।" और उसने चिंतन किया कि कितने समय तक उसने उत्तरी राज्य के प्रति संयम दर्शाया था।

> होशे की पुस्तक के अंतिम विभाजन को इस प्रकार रखा गया है कि आप इसे तब तक पहचान नहीं सकते जब तक कि बहुत ही सावधानी से न देख रहे हों, परंतु कई व्याख्याकारों ने कहा है कि इस व्यवस्था को समझने का यह सर्वोत्तम

> तरीका है, कि भविष्यवाणियों के ऐसे कई छोटे-छोटे अंश हैं जिन्हें होशे ने अपनी सेवकाई के अलग-अलग समयों में प्रदान किया, परंतु उन्हें ऐसे नियंत्रक रूपकों के इर्द-गिर्द व्यवस्थित किया गया है। और ऐसे बहुत से रूपक हैं, परंतु उनमें यह एक बात समान है : वे ऐसी बातें थीं जिन्हें प्राचीन जगत में बहुत प्रिय माना जाता था — जंगल में अंजीर के पेड़, या बसे हुए स्थान को देखना, या लहलहाती हुई दाख की बारी का मिलना, ऐसी चीजें, या फिर एक सीखी हुई बछिया जो खेतों को जोत सके, या फिर किसी परिवार के किसी पुत्र को। ये बहुत ही प्रिय वस्तुएँ थीं, और परमेश्वर इस्राएल के उत्तरी राज्य की तुलना उनसे करता है... विशेषकर जो अंतिम तुलना है, पुत्र, जहाँ वह कहता है, "मैं ही एप्रैम को पाँव-पाँव चलाता था, और उनको गोद में लिए फिरता था।" और एक प्रेमी पिता के रूप में परमेश्वर ने स्वयं को इस्राएल का प्रिय बना दिया था, और वे भी उसके प्रिय थे, परंतु फिर भी वे विद्रोह करते रहे। जितना अधिक परमेश्वर ने उन्हें दिया, जितना अधिक उसने उनके लिए किया, उतना अधिक उन्होंने उसके विरुद्ध विद्रोह किया। पर फिर वह कहता है, "हे इस्राएल, मैं कैसे तुझे छोड़ दूँ? हे एप्रैम, मैं तुझे कैसे छोड़ दूँ? मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि तुम मेरे लिए बहुमूल्य हो।" इसलिए जब तक हम यह नहीं समझते, हम उन रूपकों के अर्थ को खो देते हैं कि अपनी बुद्धि में परमेश्वर अपने लोगों को ताड़ना देता है, अर्थात् अपने वाचाई लोगों को, अपने *प्रिय* वाचाई लोगों को, परंतु वह अपने वाचाई लोगों को कभी छोड़ता नहीं है; और एक दिन वे अवश्य मन फिराएँगे और उसकी आशीषों को प्राप्त करेंगे।
>
> — डॉ. रिर्चड, एल. प्रैट, जूनियर

इस्राएल के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह से भरे प्रत्युत्तरों के विषय में इन भविष्यवाणियों के उद्देश्य को समझना कठिन नहीं है जब होशे ने उन्हें पहले पहल प्राप्त किया था। अपनी सेवकाई के विभिन्न चरणों में होशे ने देखा था कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएल को मन फिराव की बुलाहट देने के लिए उनके प्रति अनुग्रह और धीरज को दर्शाया था। परंतु अधिकतर उन्होंने न सुनी और उसके विरुद्ध विद्रोह करते रहे। इसलिए उत्तरी राज्य अधिक से अधिक परमेश्वर के शापों के अधीन आ गया। परंतु परमेश्वर ने फिर भी हर कदम पर उन्हें अनुग्रह प्रदान किया।

अतः जब होशे ने हिजकिय्याह के समय में यहूदा के अगुवों को बुद्धि की बातें प्रदान करने के लिए अपनी पुस्तक को लिखा, तो उसने अपने तीसरे विभाजन को इस्राएल के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह से भरे प्रत्युत्तरों पर केंद्रित किया। वह यहूदा के अगुवों को प्रेरित करना चाहता था कि यद्यपि परमेश्वर ने उत्तरी राज्य को निर्वासन में भेज दिया था, फिर भी वे अंत के दिनों की आशीषों की आशा रखें। इस्राएल के विद्रोह के बावजूद अतीत के विषय में परमेश्वर के चिंतनों ने उनके प्रति उसके अनुग्रह और धीरज को प्रकट किया। और इस बात ने यहूदा को आशा प्रदान की कि एक दिन दाऊद के घराने के शासन के अधीन ये दोनों राज्य एक साथ मिल जाएँगे, और परमेश्वर फिर भी अपने लोगों पर अपनी अंत के दिनों की आशीषों को उंडेलेगा।

हम देख चुके हैं कि कैसे होशे की पुस्तक के तीसरे विभाजन में उसके मूल अर्थ ने यहूदा के अगुवों को सिखाया कि वे अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह से भरे प्रत्युत्तरों के कारण आशा रखें। अब आइए यह देखें कि कैसे भविष्य की आशीषों की आशा परमेश्वर के प्रति लोगों के प्रत्युत्तरों में भी पाई जाती है।

लोगों के प्रत्युत्तर

जैसे कि तीसरे विभाजन के प्रकाशनों का हमारा सारांश हमें बताता है :

> अंत के दिनों के लिए परमेश्वर की आशीषों की आशा... तभी आएगी जब परमेश्वर के लोग उसके दंडों के प्रति उचित प्रत्युत्तर देते हैं।

होशे की पूरी सेवकाई के दौरान अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह से भरे व्यवहार ने भविष्य में परमेश्वर की आशीषों के लिए आशा प्रदान की। परंतु इसके साथ-साथ होशे ने मानवीय जिम्मेदारी के महत्व को कम नहीं किया। यदि यहूदा के अगुवे यह देखना चाहते थे कि परमेश्वर उनके शापों को दूर करे और अपने लोगों को अंत के दिनों की आशीषों की ओर लेकर जाए, तो इस्राएल और यहूदा के लोगों को कुछ करना जरूरी था। उन्हें मन फिराना और परमेश्वर की सेवा में जीवन बिताना जरूरी था।

जैसे कि हम जानते हैं, होशे की पुस्तक के इस विभाजन के पाँच खंड होशे के समक्ष उसकी सेवकाई के अलग-अलग चरणों में प्रकट किए गए थे। परंतु क्योंकि उत्तरी राज्य, दक्षिणी राज्य की अपेक्षा परमेश्वर से बहुत पहले ही दूर हो गया था, इसलिए इस विभाजन का आरंभ प्रमुख रूप से परमेश्वर के प्रति *इस्राएल* के प्रत्युत्तर पर ध्यान केंद्रित करता है। निस्संदेह आहाज और हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान यहूदा भी परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में पड़ गया था। इसलिए बाद में होशे ने यहूदा के लिए भी बुलाहटों को जोड़ा कि वह दीनता और पश्चाताप के साथ परमेश्वर को प्रत्युत्तर दे।

पद 9:10-12 में परमेश्वर द्वारा इस्राएल की फल के साथ तुलना में होशे ने इस्राएल को परमेश्वर के विरुद्ध अपने विद्रोह के लंबे इतिहास के साथ समझने की बुलाहट दी। जैसा कि हमने पहले देखा था, पद 10 इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि इस्राएल के "पुरखाओं [ने] पोर के बाल के पास जाकर अपने को लज्जा का कारण होने के लिये अर्पण कर दिया।" अतीत पर परमेश्वर के चिंतनों ने उसके संयम को प्रकट किया, परंतु होशे ने ऐसी एक बात पर भी बल दिया जिसे इस्राएल को अपने विषय में समझने की आवश्यकता थी। परमेश्वर के विरुद्ध उनका वर्तमान विद्रोह कोई अलग-थलग घटना नहीं थी। इसके विपरीत, इस्राएल को यह मानना था कि उनके पूर्वजों ने पीढ़ियों तक मूर्तिपूजा और प्रजनन संबंधी आराधना करने के द्वारा उनके विरुद्ध परमेश्वर के प्रकोप को एकत्र कर दिया था।

पद 9:13-17 में परमेश्वर के द्वारा बसे हुए स्थान के साथ इस्राएल की तुलना ने इस्राएल को अपने अतीत को और अधिक मानने की चुनौती दी। पद 9:15 में परमेश्वर ने दर्शाया कि उसने शाऊल के शासनकाल के दौरान गिलगाल में "उनसे घृणा की।" स्पष्ट रूप से, उत्तरी गोत्र कभी अपने पूर्वजों के पापों से फिरे ही नहीं थे। जैसे कि होशे ने पद 9:17 में कहा, "उन्होंने उसकी नहीं सुनी।" परमेश्वर की ओर से दी गई चेतावनियों को इस्राएल द्वारा बार-बार ठुकरा देने से उसकी दृष्टि में उनके पाप और अधिक बढ़ गए।

पद 10:1-10 में परमेश्वर द्वारा लहलहाती हुई दाखलता के साथ इस्राएल की तुलना में हम अतीत पर मन फिराव के ऐसे ही ध्यान को देखते हैं। पद 10:9 में परमेश्वर ने घोषणा की कि इस्राएल के पाप पीछे राजा शाऊल तक फैले हुए हैं। जैसे कि हमने पढ़ा था, परमेश्वर ने उनसे कहा, "हे इस्राएल, तू गिबा के दिनों से पाप करता आया है।" परंतु होशे ने पद 2 में यह भी दर्शाया कि अपने इन दावों के बावजूद भी कि उन्होंने परमेश्वर के सामने स्वयं को दीन किया था, "उनका मन बटा हुआ" था। और पद 4 में परमेश्वर ने फिर से कहा कि "वे बातें बनाते और झूठी शपथ खाकर वाचा बाँधते हैं।"

पद 10:11-15 में अपने द्वारा इस्राएल की सीखी हुई बछिया के साथ तुलना में परमेश्वर ने फिर से पाप को स्वीकार करने की इस्राएल की आवश्यकता की पुष्टि की। पद 13 में परमेश्वर ने यह कहते हुए इस्राएल पर लंबे समय से विद्रोह करते रहने और मन न फिराने का आरोप लगाया, "तुम ने दुष्टता के लिये हल जोता और अन्याय का खेत काटा है; और तुम ने धोखे का फल खाया है... तुम ने अपने कुव्यवहार पर, और अपने बहुत से वीरों पर भरोसा रखा था।"

अब जैसा कि हम देख चुके हैं, यह खंड तब आया जब होशे ने 722 ईसा पूर्व में अश्शूरी आक्रमण के विषय में भविष्यवाणी की थी — यहूदा में आहाज द्वारा शासन आरंभ करने के बाद। अपने से पहले आए राजाओं के विपरीत आहाज ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में यहूदा की अगुवाई की। अतः यहाँ परमेश्वर के प्रति *इस्राएल* को संबोधित करने के अतिरिक्त होशे ने *यहूदा* को भी संबोधित किया। परंतु इस्राएल के विपरीत यहूदा के पास अतीत में विद्रोह का कोई लंबा इतिहास नहीं था। इसलिए होशे ने उनकी वर्तमान परिस्थितियों में यहूदा के प्रत्युत्तर पर ध्यान केंद्रित किया। पद 10:11-12 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> यहूदा हल, और याकूब हेंगा खींचेगा। अपने लिये धर्म का बीज बोओ, तब करुणा के अनुसार खेत काटने पाओगे; अपनी पड़ती भूमि को जोतो; देखो, अभी यहोवा के पीछे हो लेने का समय है, कि वह आए और तुम्हारे ऊपर उद्धार बरसाए (होशे 10:11-12)।

यहूदा को विफलता के लंबे इतिहास से मन फिराने की बुलाहट देने की अपेक्षा होशे ने यहूदा से कहा कि वे उस पर ध्यान दें जो *उस समय* हो रहा था। उन्हें आहाज के पापपूर्ण मार्गों से मन फिराना था। उन्हें धर्म का बीज बोना और करुणा के अनुसार खेत काटना जरूरी है। उन्हें "अपनी पड़ती भूमि" — या अप्रयुक्त भूमि — "को जोतो।" और क्यों? जब अश्शूर का खतरा उनके विरुद्ध भी आया तो यह समय था कि यहूदा के लोग यहोवा को खोजें। यदि वे अपने बुरे मार्गों से फिरते हैं तो यहूदा के लिए एक नया दिन उदय होगा। परमेश्वर आएगा और उनके ऊपर उद्धार बरसाएगा। इन वचनों के साथ होशे ने उन अंत की आशीषों की ओर संकेत किया जब इस्राएल और यहूदा दाऊद के घराने के शासन के अधीन एक हो जाएँगे। परंतु यहूदा का राज्य तब तक अपनी भूमिका को पूरा करना आरंभ नहीं कर पाया जब तक कि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया, और परमेश्वर की धार्मिकता उन पर उंडेली नहीं गई।

अंततः पद 11:1–14:8 में परमेश्वर द्वारा इस्राएल की प्रिय बालक या पुत्र के साथ तुलना अतीत की असफलताओं को मानने की इस्राएल की आवश्यकता का सबसे व्यापक विवरण प्रदान करती है। एक बार फिर परमेश्वर ने विद्रोह के एक लंबे इतिहास के साथ उनका सामना किया। उसने मूसा के समय से ही उनके साथ अपने पुत्र के समान व्यवहार किया था। परंतु पद 11:2 में परमेश्वर ने इस सच्चाई पर चिंतन किया, "जितना वे उनको बुलाते थे, उतना ही वे भागे जाते थे; वे बाल देवताओं के लिये बलिदान करते, और खुदी हुई मूरतों के लिये धूप जलाते गए।" सदियों से इस्राएल के हठ ने पद 7 में परमेश्वर को यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित किया, "मेरी प्रजा मुझ से फिर जाने में लगी रहती है; यद्यपि वे उनको परमप्रधान की ओर बुलाते हैं, तौभी उन में से कोई भी मेरी महिमा नहीं करता।" इस्राएल इतना भ्रष्ट हो गया था कि परमेश्वर दया के लिए उनकी पाखंडी याचनाओं को स्वीकार नहीं करेगा। जब इस्राएल का निर्वासन जारी रहा, तो उत्तरी गोत्रों को अपने पूर्वजों की झूठी, पाखंडी भक्ति को त्यागना जरूरी था। परमेश्वर ने उनसे कहा कि वे अपने पापों के सच्चे पश्चाताप को चढ़ाएँ। परंतु परमेश्वर ने इस्राएल को यह आश्वासन भी दिया कि अंत के दिनों की आशीषें फिर भी उनके जीवन में आएँगी। जैसा कि हम पद 11 पढ़ते हैं, "वे मिस्र से चिड़ियों के समान और अश्शूर के देश से पण्डुकी की भाँति थरथराते हुए आएँगे; और मैं उनको उन्हीं के घरों में बसा दूँगा, यहोवा की यही वाणी है।"

अपनी वर्तमान परिस्थितियों में परमेश्वर के प्रति यहूदा के प्रत्युत्तर का उल्लेख भी इस अंतिम खंड में किया गया है। पद 11:12 में परमेश्वर ने घोषणा की, "यहूदा... परमेश्वर की ओर चंचल बना रहता है।" दुखद रूप से, इस अनुच्छेद की इब्रानी भाषा व्याख्या के लिए कठिन है। इसे इस्राएल के विपरीत, यहूदा के प्रति परमेश्वर की स्वीकारोक्ति के शब्द के रूप में, और यहूदा के विरुद्ध दंड के शब्द के रूप अनुवाद किया जाता रहा है। परंतु जब हम देखते हैं कि इस अनुच्छेद को होशे की सेवा के अंत के करीब रखा गया है, तो यह संभवतया दंड का शब्द है। जैसे-जैसे शोमरोन का विनाश निकट आता गया, यहूदा भी

इस्राएल के समान अधिक से अधिक विद्रोही होता गया। पद 12:2-6 को सुनें, जो होशे के तीसरे विभाजन में यहूदा के विषय में अंतिम और सबसे लंबी भविष्यवाणी है :

> यहूदा के साथ भी यहोवा का मुक़द्दमा है, और वह याकूब को उसके चालचलन के अनुसार दण्ड देगा; उसके कामों के अनुसार वह उसको बदला देगा। अपनी माता की कोख ही में उसने अपने भाई को अड़ंगा मारा, और बड़ा होकर वह परमेश्वर के साथ लड़ा। वह दूत से लड़ा, और जीत भी गया, वह रोया और उस से गिड़गिड़ाकर विनती की। बेतेल में वह उसको मिला, और वहीं उस ने हम से बातें कीं। यहोवा, सेनाओं का परमेश्वर, जिसका स्मरण यहोवा के नाम से होता है। इसलिये तू अपने परमेश्वर की ओर फिर; कृपा और न्याय के काम करता रह, और अपने परमेश्वर की बाट निरन्तर जोहता रह (होशे 12:2-6)।

इस अनुच्छेद में परमेश्वर ने यहूदा को उत्पत्ति 25–36 में उल्लिखित याकूब के जीवन की कहानी पर मनन करने को कहा। उसकी भविष्यवाणी ने दर्शाया कि कैसे याकूब ने पाप किया जब उसने अपने भाई को अड़ंगा मारा। परंतु याकूब परमेश्वर से, और पनीएल में उसके दूत से लड़ा। वहाँ याकूब ने गिड़गिड़ाकर परमेश्वर के अनुग्रह को खोजा, और प्राप्त भी किया। इसी अर्थ में होशे ने यहूदा से कहा कि वह अपने पापों के कारण गिड़गिड़ाए और परमेश्वर के अनुग्रह को खोजे। और याकूब के लिए क्या परिणाम रहा? वह बेतेल में परमेश्वर से मिला और उसने नए सिरे से सीखा कि वह "यहोवा, सेनाओं का परमेश्वर है।" यह एक ईश्वरीय शीर्षक है जिसने परमेश्वर का उल्लेख स्वर्गदूतों की सेना के प्रधान के रूप में किया। होशे ने याकूब की कहानी को यहूदा पर लागू किया। यहूदा भी स्वर्गीय सेना के यहोवा, अर्थात् परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त कर सकता था जब उन्होंने अश्शूरी या बेबीलोन की सेनाओं का सामना किया। यदि वे "अपने परमेश्वर की ओर" फिरें या मन फिराएँ, "कृपा और न्याय के काम" करें, "और अपने परमेश्वर की बाट" निरंतर जोहते रहें, तो वे यहोवा को अपनी सेना के साथ उनके लिए कार्य करता हुआ देखेंगे।

यह देखना कठिन नहीं है कि क्यों होशे ने अपनी पुस्तक के अंत के निकट यहूदा के विषय में इन शब्दों को कहा। जैसे कि आपको याद होगा, उसने या तो अपनी पुस्तक की रचना 701 ईसा पूर्व में सन्हेरिब के आक्रमण से ठीक पहले लिखी जब यहूदा अश्शूर के खतरे का सामना कर रहा था। या फिर, उसने इसे तब लिखा जब यहूदा बेबीलोन के खतरे का सामना कर रहा था, अर्थात् 701 ईसा पूर्व में सन्हेरिब के आक्रमण के ठीक *बाद*— जैसा कि हम यशायाह 39:6 में देखते हैं। जैसा भी हुआ हो, यहूदा को परमेश्वर की सहायता की अत्यधिक आवश्यकता थी। यदि वे चाहते थे कि परमेश्वर उनके शत्रुओं के विरुद्ध अपनी स्वर्गीय सेना के साथ जाए, तो उन्हें दीनता और पश्चाताप के साथ प्रत्युत्तर देना जरूरी था। उन्हें यह मानने की जरूरत थी कि वे याकूब के समान रहे थे जब वह अपने आरंभिक वर्षों में था, और कि उन्हें बाद के वर्षों में भी याकूब के समान बनना जरूरी है। तभी, और केवल तभी यहूदा इस्राएल के उत्तरी राज्य के लिए परमेश्वर के अंत के दिनों की आशीषों का माध्यम बन सकता था।

परंतु होशे ने यहूदा के मन फिराव के लिए जितनी भी याचना की हो, वह फिर भी जानता था कि यहूदा के अगुवों को भी निर्वासन में गए उत्तरी गोत्रों के लिए आशा की जरूरत थी। होशे ने अपनी पुस्तक के पहले विभाजन में स्पष्ट कर दिया था कि परमेश्वर की आशीषें तब आएँगी जब इस्राएल और यहूदा दाऊद के घराने के प्रति समर्पित होकर एक हो जाएँगे। अतः अंत के दिन की आशीषों की यहूदा की आशा तभी पूरी होंगी यदि इस्राएल परमेश्वर के पास लौट आता है। इसी कारण, होशे ने पद 14:1-8 में अपनी पुस्तक के इस अंतिम खंड को इस्राएल के लिए मन फिराने की आवश्यकता की एक लंबी बुलाहट के साथ समाप्त किया। पद 14:1-3 को सुनें :

> हे इस्राएल, अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आ, क्योंकि तू ने अपने अधर्म के कारण ठोकर खाई है। बातें सीखकर और यहोवा की ओर लौटकर, उससे कह,

> “सब अधर्म दूर कर; अनुग्रह से हम को ग्रहण कर; तब हम धन्यवाद रूपी बलि चढ़ाएँगे। अश्शूर हमारा उद्धार न करेगा, हम घोड़ों पर सवार न होंगे; और न हम फिर अपनी बनाई हुई वस्तुओं से कहेंगे, ‘तुम हमारे ईश्वर हो;’ क्योंकि अनाथ पर तू ही दया करता है (होशे 14:1-3)।”

वास्तव में होशे ने उत्तरी इस्राएलियों से कहा, चाहे वे यहूदा में उसके साथ रहनेवाले हों या फिर अन्य क्षेत्रों में भटके हुए हों, कि वे यहोवा की ओर लौट आएँ। और यह निश्चित करने के लिए कि वे यह जानते हों कि ऐसा कैसे करें, उसने उन्हें मन फिराने की एक पद्धति प्रदान की। उन्हें यहोवा से यह कहना था, “सब अधर्म दूर कर।” उन्हें परमेश्वर से माँगना था कि “अनुग्रह से हम को ग्रहण कर; तब हम धन्यवाद रूपी बलि चढ़ाएँगे।” उन्हें अश्शूर और घोड़ों में, या मानवीय सैन्य शक्ति में रखी हर आशा को ठुकराना था। उन्हें हर प्रकार की मूर्तिपूजा को ठुकराना था, और कभी किसी मूर्ति को “हमारे परमेश्वर” नहीं कहना था। और उनके सच्चे मन फिराव के प्रति परमेश्वर का क्या प्रत्युत्तर होगा? पद 14:7 में परमेश्वर ने कहा :

> [वे] उसकी छाया में बैठेंगे, वे अन्न के समान बढ़ेंगे, वे दाखलता के समान फूले-फलेंगे; और उसकी कीर्ति लबानोन के दाखमधु की सी होगी (होशे 14:7)।

जब उत्तरी इस्राएलियों ने इस रीति से अपने आप को नम्र किया तो परमेश्वर ने आशीषों को उंडेलने की प्रतिज्ञा की।

प्रकट होने वाली आशा की होशे की भविष्यवाणियों के साथ जुड़े मूल अर्थ ने परमेश्वर के अनुग्रह से भरे प्रत्युत्तरों, और इस्राएल तथा यहूदा से अपेक्षित प्रत्युत्तरों में बहुत सी अंतर्दृष्टियों को प्रकट किया। अब, आइए इस विभाजन के आधुनिक प्रयोग के विषय में विचार करें। इस विभाजन में पाए जानेवाले प्रकाशनों से हम पर क्या प्रभाव पड़ना चाहिए?

आधुनिक प्रयोग

अपनी पुस्तक के तीसरे विभाजन में होशे ने यहूदा के अगुवों को फिर से आश्वस्त किया कि परमेश्वर अब भी अपनी दुल्हन से प्रेम करता है और एक दिन अपनी प्रिय प्रजा को पुनर्स्थापित करेगा। और लगभग इसी प्रकार आज मसीह के अनुयायियों के रूप में हम आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर मसीह की दुल्हन से प्रेम करना जारी रखता है। परंतु जिस प्रकार परमेश्वर के प्रति उचित प्रत्युत्तर देने की इस्राएल और यहूदा की आवश्यकता के प्रति होशे ने संकेत किया, वैसे ही यदि हम अंत के दिनों की आशीषों में सहभागी होने की आशा रखते हैं जब मसीह का पुनरागमन होगा, तो हमें भी इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हम परमेश्वर के प्रेम के प्रति कैसे प्रत्युत्तर देते हैं।

इस तीसरे विभाजन के आधुनिक प्रयोग को खोजने के लिए हम एक बार फिर से मसीह की दुल्हन और मसीह में अंत के दिनों के नए नियम के विषयों पर ध्यान देंगे। आइए पहले इस बात पर ध्यान दें कि कैसे होशे के अंतिम प्रकाशन मसीह की दुल्हन के रूप में हम पर लागू होते हैं।

मसीह की दुल्हन

होशे के समय में परमेश्वर की पुराने नियम की दुल्हन के पापों ने परमेश्वर के दंडों के अधीन बड़े कष्टों में उसकी अगुवाई की। उत्तरी इस्राएल को अश्शूरी आक्रमण के द्वारा निर्वासन में भेजा जा चुका था। और जब यहूदा विद्रोह करने लगा तो उन्हें भी विनाश और निर्वासन की चेतावनी दी गई। फिर भी, इन निराशाजनक और भयानक परिस्थितियों के बावजूद भी होशे ने दृश्य और अदृश्य के प्रत्येक व्यक्ति को मन फिराने और विश्वास के द्वारा क्षमा प्राप्त करने के लिए बुलाया। उसने उसकी आशा रखी जिसे अन्य

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भविष्यवक्ताओं ने "बचे हुए लोग" कहा था, अर्थात् वे विश्वासयोग्य लोग जो उद्धार के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ेंगे और उसकी अनंत आशीषों को प्राप्त करेंगे।

इसी रीति से, जब तक मसीह का महिमा में पुनरागमन नहीं होता, मसीह की दुल्हन सिद्ध नहीं हो पाएगी। और भिन्न समयों और भिन्न रूपों में परमेश्वर अपने नए नियम के लोगों के विरुद्ध दंड को लेकर आया है। संसार के कुछ भागों में जबकि कलीसिया मजबूत है, वहीं अन्य स्थानों पर जहाँ कलीसिया किसी समय में मजबूत थी, अब वहाँ मुश्किल से ही इसका अस्तित्व है क्योंकि परमेश्वर ने अपना दंड भेजा है। परंतु होशे के ही समान हम इस बात के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं कि कलीसिया की दशा चाहे कितनी भी निराशाजनक क्यों न प्रतीत हो, परमेश्वर अपनी दुल्हन को त्यागकर दूसरे लोगों को नहीं ढूँढेगा। परमेश्वर दृश्य और अदृश्य कलीसिया के प्रत्येक पुरुष, स्त्री और बच्चे को मन फिराव और विश्वास के द्वारा क्षमा को प्राप्त करने के लिए बुलाता है। वह *हमें* विश्वासयोग्य लोगों के "बचे हुए लोग" बनने के लिए बुलाता है जो मसीह के पुनरागमन के समय पूर्ण छुटकारे और अनंत आशीषों को प्राप्त करेंगे।

मसीह की दुल्हन की दशा के प्रति इस आधारभूत जानकारी के साथ, आइए अब मसीह में अंत के दिनों के संदर्भ में होशे के अंतिम विभाजन के आधुनिक प्रयोग पर चर्चा करें।

मसीह में अंत के दिन

जैसे कि हमने पहले देखा था, अंत के दिनों की मसीह द्वारा पूर्णता नए नियम की पूरी अवधि के दौरान होती है। यह उसके राज्य के उद्घाटन में आरंभ हुई। यह पूरे कलीसियाई इतिहास में उसके राज्य की निरंतरता के दौरान और अधिक आगे बढ़ती है। और यह तब पूरी होगी जब मसीह अपने राज्य की पूर्णता के समय वापस आएगा। अतः जैसा कि हमने होशे के अन्य विभाजनों के साथ किया है, हम इन तीनों चरणों को मन में रखते हुए परमेश्वर की प्रकट होने वाली आशा के विषय में उसकी भविष्यवाणियों को देखेंगे।

सबसे पहले, नया नियम यह स्पष्ट करता है कि जो आशा होशे ने इस्राएल और यहूदा को प्रदान की वह मसीह के राज्य के उद्घाटन के दौरान पूरी होने लगी। यीशु के पहले आगमन ने दर्शाया कि परमेश्वर ने अपनी दुल्हन को पूरी तरह से नहीं त्यागा था। बल्कि मसीह में उसने अंत के दिनों के विषय में होशे की आशापूर्ण भविष्यवाणियों को पूरा करने की शुरुआत करने के द्वारा अपने लोगों के प्रति अनुग्रह और धीरज को दर्शाया। परंतु मसीह के राज्य के उद्घाटन के दौरान भी परमेश्वर ने मन फिराव और विश्वास के मानवीय प्रत्युत्तर की मांग की। अतः जैसे कि होशे की पुस्तक में पाया जाता है, यीशु का सुसमाचार भी परमेश्वर की दया को मानवीय प्रत्युत्तर के साथ जोड़ता है। मत्ती 2:15 में हम अनुग्रह और मन फिराव के इस संयोजन को देख सकते हैं। मत्ती ने यह लिखा :

> इसलिये कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था पूरा हो : "मैं ने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया" (मत्ती 2:15)।

यह पद यूसुफ, मरियम और यीशु द्वारा मिस्र को भाग जाने और फिर सुरक्षित रूप से लौट आने के विषय में है। मत्ती ने होशे 11:1 को उद्धृत किया जहाँ परमेश्वर ने तब बड़ी दया को प्रकट किया था जब उसने इस्राएल राष्ट्र को मिस्र से बुलाया था। और मत्ती ने कहा कि यह भविष्यवाणी मसीह के राज्य के उद्घाटन के दौरान पूरी हो गई थी, जब मसीह हेरोदेस की मृत्यु के बाद मिस्र से लौटा था।

अब हमें यहाँ सावधान रहना होगा। मत्ती जानता था कि होशे ने प्रत्यक्ष रूप से यीशु का उल्लेख नहीं किया था। इसकी अपेक्षा, होशे ने मिस्र में से इस्राएल के निकल आने का उल्लेख किया, और इस बात का भी कि कैसे इस्राएल ने अपने प्रति परमेश्वर की बड़ी दया के बावजूद उसके प्रति विद्रोह किया। मत्ती ने इस बात को भी दर्शाया कि परमेश्वर ने यीशु, अर्थात् अपने राजकीय पुत्र को मिस्र में से बुलाने के द्वारा अपनी दुल्हन के प्रति बड़ी दया को दिखाया था। परंतु फिर भी इस्राएल के बहुत से लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विद्रोह किया। जैसे मत्ती ने अपने सुसमाचार में कई बार दर्शाया, परमेश्वर अपनी दया में भी मन फिराव और विश्वास के मानवीय प्रत्युत्तर की मांग करता है। और यीशु के समय में हेरोदेस जैसे बहुत से लोगों ने परमेश्वर के अनंत दंड को सहा क्योंकि उन्होंने मसीह में परमेश्वर की दया का उचित प्रत्युत्तर नहीं दिया।

> होशे 11:1 में परमेश्वर ने कहा, "मैं ने... अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया," और यह परमेश्वर की मूसा को बुलाहट की ओर संकेत करता है क्योंकि जब परमेश्वर ने अपने लोगों को छुड़ाने के लिए मूसा को बुलाया तो उसने मूसा से कहा, "इस्राएल मेरा पुत्र वरन् मेरा जेठा है।" और फिर जो निर्देश उसने मूसा को दिया वह फिरौन से यह कहने का था, "इस्राएल मेरा पुत्र है। मेरे पुत्र को जाने दे। मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे।" अतः यह भाषा-शैली मूसा की बुलाहट और निर्गमन की ओर संकेत करती है... परंतु यह हमें निर्गमन और मूसा के समय की याद दिलाते हुए इस बात का स्मरण भी कराती है कि परमेश्वर ने जंगल में इस्राएल को क्या दिया था। उसने इस्राएल को व्यवस्था दी, और अपनी व्यवस्था में उसने आज्ञाकारिता के लिए आशीषों और अनाज्ञाकारिता के लिए शापों की प्रतिज्ञा की। और इसलिए इस्राएल को यह याद दिलाने में कि इस्राएल कहाँ से आया है, वह इस्राएल को भी व्यवस्था के प्रति इस्राएल की जिम्मेदारियों का स्मरण करा रहा था। और होशे में यही बुलाहट थी। लोग अविश्वासयोग्य बन रहे थे। उन्होंने आज्ञाकारिता और आशीष की अपेक्षा अनाज्ञाकारिता और शाप को चुना था। यदि हम इसे नए नियम में ले जाते हैं, तो यह देखना रुचिकर है कि नए नियम में मत्ती इसे होशे से उद्धृत करता है, और इसे यीशु के विषय में दिखाता है क्योंकि यूसुफ और मरियम और यीशु को मिस्र भागना पड़ा था, और फिर वे मिस्र से लौट आए थे। और मत्ती बड़े रूचिकर रूप में और चकित करते हुए इसे उद्धृत करता है और कहता है, "मैं ने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।" वह इस बात को पहचान लेता है कि यीशु नया इस्राएल है, यीशु सच्चा इस्राएल है, यीशु आज्ञाकारी इस्राएल है, और यीशु निर्गमन को दोहरा रहा है और मिस्र से निकल रहा है, परंतु वह इसे सही रूप में कर रहा है। वह इसे आज्ञाकारिता के साथ कर रहा है। अतः इस्राएल, अर्थात् वास्तविक इस्राएल ने अंततः आज्ञा मान ली है।
>
> — डॉ. लैरी ट्रोटर

दूसरी, मसीह के राज्य की संपूर्ण निरंतरता में कलीसिया को अपनी वर्तमान परिस्थितियों में होशे के तीसरे विभाजन के प्रकाशनों को लागू करना चाहिए। जब कलीसिया और आगे बढ़कर पूरे संसार में फ़ैल चुकी है, तो मसीह में परमेश्वर का अनुग्रह अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच चुका है — यहूदियों और अन्यजातियों दोनों तक। और हमारी असिद्धताओं के बावजूद भी परमेश्वर बड़ी दया के साथ अपनी दुल्हन, अर्थात् कलीसिया का आनंद लेता है। अतः आशीषों की हमारी आशा हमेशा हमारी विफलताओं के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह से भरे प्रत्युत्तरों पर आधारित होनी चाहिए। फिर भी, होशे ने बल दिया कि अंत के दिनों की आशीषें परमेश्वर के अनुग्रह के प्रति मानवीय प्रत्युत्तरों पर भी निर्भर थीं। और इसी रीति से मसीह में परमेश्वर की आशीषें उन्हें प्राप्त होती हैं जो अपने पापों से मन फिराते हैं और उद्धार के लिए परमेश्वर को पुकारते हैं। इसी लिए मन फिराना उन सब लोगों के दैनिक जीवनों के लिए बहुत महत्वपूर्ण पहलू है जो आज मसीह का अनुसरण करते हैं।

तीसरी, परमेश्वर की प्रकट होने वाली आशा के विषय में होशे की भविष्यवाणियाँ अंततः मसीह के राज्य की पूर्णता में पूरी होती हैं। होशे ने इस्राएल और यहूदा के उन लोगों को अंत के दिनों में आशीषों की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आशा प्रदान की जो मन फिराएँगे। और नया नियम आज मसीह की दुल्हन को अंत के दिनों की महिमा की आशा प्रदान करता है। हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम के कारण, वह उन सब लोगों को एक दिन उनके सब पापों से शुद्ध कर देगा जिनके पास उद्धार देनेवाला विश्वास है। और जब वह उन्हें नई सृष्टि की आशीषों में लेकर आएगा, तो उन्हें सारे दंड से छुड़ाएगा। 1 कुरिन्थियों 15:54-55 में प्रेरित पौलुस ने इस रीति से अंत के दिनों की पूर्णता का उल्लेख किया :

> जब यह नाशवान् अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा : "... हे मृत्यु, तेरी जय कहाँ रही? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ रहा?" (1 कुरिन्थियों 15:54-55)

यहाँ प्रेरित ने होशे 13:14 का उल्लेख करने के द्वारा मसीह के पुनरागमन के आश्चर्यकर्म का वर्णन किया। वहाँ परमेश्वर ने इस्राएल पर आए विनाश और निर्वासन के दंड के बावजूद मृत्यु का मजाक उड़ाया। आशा खोई नहीं थी। इस्राएल पर मृत्यु के शाप का कोई भी प्रभाव समाप्त हो जाएगा क्योंकि अंत के दिनों में परमेश्वर उन्हें छुड़ाएगा और दाऊद के घराने के प्रति समर्पण में यहूदा के साथ जोड़ देगा।

मसीहियों के रूप में हम जानते हैं कि यह आशा एक दिन मसीह, अर्थात् दाऊद के महान पुत्र में पूरी होगी। उन असफलताओं और कठिनाइयों के बावजूद जिनका हम सामना करते हैं, हम बड़ी अपेक्षा के साथ मसीह के पुनरागमन की बाट जोहते हैं। उस दिन, मसीह में परमेश्वर पर आशा रखनेवाले सब लोग, और अपने पापों से मन फिरानेवाले सब लोग अंत के दिनों की आशीषों को प्राप्त करेंगे। हम मृत्यु और कब्र की शक्ति का ठट्ठा उड़ाने में होशे का साथ देंगे, क्योंकि जिस आत्मा ने यीशु को मृतकों में से जिलाया वही हमें अनंत जीवन के लिए जिलाता है।

प्रेरित यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मसीह के राज्य की पूर्णता के अपने दर्शन में इसी आशा को अभिव्यक्त किया। होशे की पुस्तक में से कई विषयों से प्रेरणा लेते हुए उसने नए यरूशलेम, अर्थात् दाऊद के पुत्र के महिमामय नगर और परमेश्वर की दुल्हन के निवास-स्थान, का वर्णन किया। जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 21:2-3 में पढ़ते हैं :

> फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा। वह उस दुल्हिन के समान थी जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो... "देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा" (प्रकाशितवाक्य 21:2-3)।

उपसंहार

बुद्धिमानों के लिए होशे के प्रकाशनों पर आधारित इस अध्याय में हमने देखा है कि कैसे होशे ने परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के दंड और उसकी आशा को प्रकट किया, और उन आशीषों को भी जो यहूदा के माध्यम से अंत के दिनों में आएँगी। हमने अध्ययन किया है कि कैसे होशे ने हिजकिय्याह के समय के यहूदा के अगुवों को सिखाया कि परमेश्वर का प्रकट होने वाला दंड इस्राएल और यहूदा दोनों पर क्यों आया था। और हमने आशीषों की प्रकट होने वाली उस आशा की खोज की है जो परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा और उस अनुग्रह के प्रति लोगों के प्रत्युत्तर के द्वारा अंत के दिनों में परमेश्वर के लोगों को प्राप्त होगी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

होशे को मिले परमेश्वर के प्रकाशनों ने मसीह के आने के सैंकड़ों वर्ष पहले परमेश्वर के लोगों को बुद्धि प्रदान की। और वे आज भी हमें बुद्धि की बातें प्रदान करते हैं। मसीह की दुल्हन के रूप में हम ऐसे संसार में रहने की चुनौतियों का सामना करते हैं जो आज भी परमेश्वर के दंड के अधीन कष्ट सहता है। परंतु परमेश्वर ने कभी अपनी कलीसिया को नहीं त्यागा है। उसने हमारे उद्धार को सुरक्षित करने और अंत के दिनों को आरंभ करने के लिए मसीह को भेजा। और पवित्र आत्मा के द्वारा मसीह हमारे भीतर वास करता है ताकि वह आने वाले संसार की आशीषों में हमारी अगुवाई करे। जब हम बुद्धि की उन बातों को अपने मन में बसा लेते हैं जो होशे की पुस्तक प्रदान करती है, तो हम इस संसार पर विजय प्राप्त करेंगे और मेमने के महिमामय विवाह-भोज में अनेक अन्य लोगों के साथ शामिल होंगे। मसीह की प्रिय दुल्हन के रूप में हम अनंत महिमा के असीम आनंद में मसीह के साथ सहभागी होने की आशीष प्राप्त करेंगे।